

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१३, अंक-११ फरवरी २०२४ मुम्बई

सम्पादक-बिजय कुमार जैन

पृष्ठ ३६ मूल्य १००.०० रुपए



बिजयनगर
असम



'बिजयनगर' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाये



Kamal Kr. Jain

Mob: 9435107285/ 7002577716

Rahul Jain

Mob: 6000138886

M/s Yaahvi Industries

A Complete Solution for UPVC doors & windows

Near HDFC Bank, Bijoyanagar, Kamrup (Assam), Bharat- 781122

E-mail: yaahviindustries2018@gmail.com

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : <http://www.mainbharathun.co.in> भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

यह पत्रक राजस्थानी संस्कृति से भरा हुआ है जिसमें राजस्थानी तक जनक दृष्टिकोण से राजस्थानी की विविधता और इतिहास की गहराई अधिक ध्वनि से प्रसारित होती है।

पथारो सा!

पथारो सा!

पथारो सा!



भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101



मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

200 राजस्थानी संगठनों द्वारा आयोजित **BOLLYWOOD PARK**
30 मार्च 'राजस्थान स्थापना दिवस'

9वाँ
वर्ष

आपणों राजस्थान

धोंरा से ध्रुव की ओर...

29-31 मार्च 2024 को भव्यातिभव्य कार्यक्रम का आयोजन

हम 'राजस्थानी' भले ही जहाँ पर भी रहें पर अपनी संस्कृति, खान-पान, पहनावा आदि को नहीं भूलते, इसी को स्मरण करते हुए मुंबई के गोरेगांव स्थित 'फिल्म सिटी' में ७वें वर्ष में प्रवेश के साथ त्रिदिवसीय भव्यातिभव्य कार्यक्रम का आयोजन २९-३१ मार्च २०२४ को होने जा रहा है। ऐतिहासिक कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए 'भारत में है राजस्थान' को मुंबई में देखने के लिए पूर्व सूचना दी जा रही है। हमें विश्वास है कि आपकी उपस्थिति 'आपणों राजस्थान' परिवार को जरूर मिलेगी।



विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत अंतर्राष्ट्रीय संस्थान



राष्ट्रीय अध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई
मो. 9322307908

राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री
रवि जैन, मुंबई
मो. 8108843571

राष्ट्रीय महामंत्री
शोभा सादानी, कोलकाता
मो. 8910628944

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अर्णुण मूँथड़ा, हॉस्टन, अमेरिका
मो. 01(919)610-7106

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा
मो. 9414183919

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 044(770)3827595

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
निशा लहड़ा, कोलकाता
मो. 9830224300

कार्यक्रम संयोजक
अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई
मो. 97022 05252

कण-कण से गुंजेगा जय-जय राजस्थान, बढ़ायेगें भारत का गौरव और सम्मान

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

जय महाराष्ट्र!

29-31 मार्च 'मुंबई में राजस्थान' देखें

जय भारत!

संस्कृति-समाज-राष्ट्र हमारे जीवन की धरोल्य और जनकी साज-संभाज जरूरी हैं।

हार्दिक विनयांजली

मेरे गुरुवर परम पूजनीय, संत प्रवर, प्रातः वंदनीय आचार्य प्रवर
विद्यासागर जी के मोक्षगमन पर हार्दिक विनयांजली



गुरुदेव आपकी इच्छानुसार
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी जल्द ही घोषणा करेंगे

- हिंदी होगी भारत की राष्ट्रभाषा
- भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाएगा इंडिया नहीं
और विश्व को भारत मां कहेगी...

मैं भारत हूँ

एक भारत-श्रेष्ठ भारत

श्रद्धावत

विजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

राष्ट्रीय अध्यक्ष

मैं भारत हूँ फाउंडेशन



जय हिंद

सौजन्य
मेरा राजस्थान

राजस्थानी के लियारे के याम चाराम चाराम को राजस्थान बनाने वाली राजस्थान विधान

जय विद्यासागर

मैं भारत हूँ

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत



यहले मातृभाषा



फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

जरूर देखें मार्गदर्शन करें
www.mainbharathun.co.in

मैं भारत हूँ पत्रिका का आगामी विशेषांक मार्च २०२४



शिलांग



मेघालय की राजधानी डीलों का शहर 'शिलांग' राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। समुद्र तल से १,५२० मीटर (४,९९० फीट) की ऊंचाई पर स्थित, यह शहर ऊंचे पथ पर लगभग ६ किमी तक फैला हुआ है। यह एक पठार पर स्थित है जो उत्तर में उमियाम कण्ठ से धिरा है, उत्तर पश्चिम में डिएंगीई पहाड़ियों के विशाल समूह से धिरा है जो समुद्र तल से १,८२३ मीटर (६०७७ फीट) की ऊंचाई तक है और उत्तर पूर्व में समुद्र तल से धिरा है। असम घाटी की पहाड़ियाँ, उमशिरपी और उमखरा नदियाँ, जो अंततः विलीन हो जाती हैं और उमियम नदी का निर्माण करती हैं, और भी बहुत कुछ है मेघालय राजधानी शिलांग में...

Tariff Card

Monthly Magazine

Main Bharat Hun

Reader Ship

17,000

Readers

Politician /

Release Date

21th day of Every Month

Magazine Size

A4

Print Area

19 cm x 24 cm

Print in Colour

Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship)	55,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Front Page (Cover Inside)	33,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Back Page (Cover)	35,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Back Page (Inside Cover)	31,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Opening of Magazine/3rd Page	32,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Centre Page	40,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip)	8,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 50 mm		
Full Page (Inside)	22,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 225 mm		
Half Page	12,000/-*	+ 5% GST
Size : 185 x 110 mm		
Quarter Page	6,000/-*	+ 5% GST
Size : 90 x 110 mm		

* Per Insertion

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ४

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'



१४वें वर्ष में प्रवेश मैं भारत हूँ

वर्ष - १३, अंक ११, फरवरी २०२४

वार्षिक मुल्य
रु. १२००/-
१२ अंकों का



सम्पादक - बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९

दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylorgroup@gmail.com
UPI No:- 9322307908

अन्तरराना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की गणि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.

in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ००००

मेरे हृदयवासी आचार्य विद्यासागर जी मोक्षगामी हो गए

१८ फरवरी २०२४ की सुबह ही संपादकीय लिख रहा था, मेरी धर्मपत्नी संतोष मंदिरजी के दर्शन करके आई और कहा कि आपके गुरुवर विद्यासागर जी मोक्षगामी हो गए, यह सुनकर कुछ पल ऐसा लगा कि सब कुछ थम सा गया, भाव विभोर हो गया, उनके साथ बीते दर्शनार्थ पल आंखों के सामने आ गए और चिरस्थिर हो गए।

जब-जब विद्यासागर जी के मुझे दर्शन प्राप्त हुए, जीवन का नया अध्याय शुरू होता गया, कुछ करने को बल मिलता गया। कहते थे बिजय कुमार! ना मैं तुम्हें साधु संत के रूप में देखना चाहता हूँ, ना कुछ और, मैं तो चाहता हूँ कि तुम भारत माँ के लाडले बनो और 'भारत नाम सम्मान' के लिए कार्य करो।

जब मैं भारत के दक्षिण क्षेत्र यानी तेलंगाना, आंश्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु की १९ दिनों की यात्रा 'भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बने' के लिए की सोची, विद्यासागर जी के दर्शन किए, आशीर्वाद मिला, यात्रा सफल हुई लेकिन 'हिंदी' संवैधानिक रूप से राष्ट्रभाषा नहीं घोषित हो पाई तो गुरुदेव ने कहा कि उदास होने की कोई जरूरत नहीं है, कार्य करते जाओ और अपने 'भारत' को हिंदी हो या विश्व की कोई भी भाषा हो, केवल 'भारत' ही बोला जाए के लिए कार्य करो, यहां तक कहा कि 'भारत' की ज्योतिष में कहां इंडिया बैठा है पता लगाओ और 'भारत' से इंडिया दूर करने का प्रयास करो, क्योंकि एक देश के २ नाम कदापि नहीं हो सकते।

संत प्रवर महातपस्वी विद्यासागर जी के जब-जब दर्शन मिले, उनकी नज़रें व ललाट की चमक मुझे आत्म विभोर कर देता, ऐसे लगता की धंटों ही नहीं दिनों तक उनके चरणों के समक्ष बैठा रहूँ, पर ऐसा संभव कहां हो पाता, उनके दर्शनार्थ तो सैकड़ों नहीं, लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं की लाइन लगी रहती थी, उनके आशीर्वाद से जीवन को ऊर्जा मिलती रही, अब ऐसा लग रहा है कि कौन मुझे नए गंतव्य बतायेगा। आज भले ही मेरे गुरुवर मेरे पास नहीं है पर उनका आशीर्वाद व निर्देश मेरे साथ है, जब तक उनके जीवन की इच्छा 'हिंदी' बने भारत की राष्ट्रभाषा और 'भारत' को केवल 'भारत' ही इंडिया नहीं, अभियान सफल नहीं होगा, चैन से नहीं बैठूंगा और ना ही किसी भी भारतीय को चैन से बैठने दूंगा। प्रस्तुत अंक गंगासागर, विश्वकर्मा जयंती व असम का एक नगर 'बिजयनगर' की जानकारी व संक्षिप्त इतिहास के साथ आपके हाथों में है, कृपया जरूर बताएं कि कैसा लगा?

मन उदास है, गुरुवर नहीं मेरे पास है

बस आपसे ही आस है, गुरुवर की बची प्यास है
'हिंदी' बने राष्ट्रभाषा, 'भारत' केवल 'भारत' रहे

गुरुवर की इच्छा पूरी होगी एक दिन,
यही मुझे विश्वास है।

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय



हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ●

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत' को 'भारत' ही बोला जाए'

आचार्य विद्यासागर महाराज के विचार हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शक साबित होंगे



चंद्रगिरी-डोंगरगढ़: दिग्म्बर समुदाय के जैन आचार्य १०८ श्री विद्यासागर महाराज के समाधि लेने पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ भारत के कई राजनितिज्ञों, वरिष्ठ समाज सेवियों के साथ महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस ने भी शोक जताया है, सभी ने अपने संदेश में कहा कि आचार्य विद्यासागरजी महाराज जी का जीवन ज्ञान प्राप्ति, कठोर तपस्या और आत्म-कल्याण के लिए समर्पित था। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के प्रकांड विद्वान्



विद्यासागर जी महाराज ने जीवन भर उपदेशों, लेखों और कविताओं के माध्यम से जनता को प्रबुद्ध किया और उन्हें आत्म-सुधार का मार्ग दिखाया, एक महान राष्ट्रीय संत और समाज सुधारक का गोलोक गमन हो गया, उनके विचार हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शक साबित होंगे, हम सभी जैन आचार्य के समाधि लेने पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आचार्य श्री के समाधि लेने का समाचार फैलते ही भारत भर के दिग्म्बर जैन समाज के श्रद्धालुओं और भक्तों में शोक व्याप्त हो गया। श्रावक श्रेष्ठ अशोक पाटनी किशनगढ़, प्रभात जैन मुंबई, राजा भैया सूरत, अतुल सराफ पूना, विनोद बड़जात्या रायपुर, प्रमोद जैन 'कोयला' भोपाल, चंद्रगिरी तीर्थक्षेत्र



कमेटी से किशोर जैन, चंद्रकांत जैन, सुधीर जैन आदि ने अपनी विनयांजली व्यक्त की है।

चलते-फिरते संत... ५६ साल में

१.२५ लाख किमी से अधिक चले आचार्यश्री

आचार्यश्री विद्यासागर जी ने १९६८ में दीक्षा ली, इसके बाद १.२५ लाख किलोमीटर से भी ज्यादा पैदल चले, ऐसे में देखा जाए तो आचार्य श्री हर रोज औसतन ६.११ किलोमीटर पैदल चले, इस जानकारी की पुष्टि अचित सागर महाराजजी ने की, इस संबंध में जब हमने मेडिसिन स्पेशलिस्ट डॉ. योगेंद्र श्रीवास्तव के अनुसार आचार्य श्री नियमों का पालन करने वाले थे, उनका खानपान बेहद सीमित था, वे तेल, चीनी और नमक तक का सेवन नहीं करते थे, ऐसे में उनका स्वास्थ्य अच्छा था, जैसे आचार विचार और नियम संयम होता है, वैसा ही शरीर भी ढल जाता है, वैसे भी रोज पैदल चलने से आपकी क्षमता में बढ़ोतरी होती है, जैसे कोई व्यक्ति पहले एक दिन में पांच किलोमीटर ही पैदल चलकर थक जाता है, लेकिन वह रोज पांच किलोमीटर पैदल चले तो धीरे-धीरे उसकी पैदल चलने की क्षमता बढ़ती जाती है। चूंकि आचार्यश्री सालों से पैदल विहार करते रहे, निश्चित ही इससे उनके पैदल चलने की क्षमता में बढ़ोतरी हुई होगी।

आचार्यश्री के मुंह से निकला ३०

सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में लीन हो गए

१७ फरवरी रात २:३५ बजे आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र में महासमाधि में प्रवेश करने से पहले सिर्फ '३०' शब्द कहा, सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में ३० शब्द के साथ लीन हो गए। महासमाधि के पहले आचार्यजी को भी इस बात का अहसास हो गया था कि इस भूमंडल में उनका समय पूरा हो गया है, एक दिन सबको यहां से रवाना होना ही है, इसलिए वे हमेशा जैन श्रावकों को कहते थे भगवान का नाम लेते रहो। मृत्यु को मोक्ष उत्सव के रूप में लेना चाहिए, उन्होंने आखिरी समय में कहा कि उनके गुरु इंतजार कर रहे हैं, उनके पास जाने का समय आ गया है। महासमाधि के साक्षी श्रावक श्रेष्ठी अशोक पाटनी मदनगंज-किशनगढ़, प्रभात जैन मुंबई, आदि हजारों की संख्या में श्रावकगण उपस्थित थे।

देश में... चौका नहीं लगा, जैन संतों ने रखा निर्जला उपवास

आचार्यश्री की महासमाधि के अवसर पर पूरे देश में शेष पृष्ठ ७ पर...

जन-जन की आशा है हिंदी, भारत की भाषा है हिंदी-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ●६

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

दिग्म्बर जैन संतों के साथ गुरुदेव विद्यासागर जी



बिजय कुमार तुम्हें न मैं साधु-संत के रूप में देखना चाहता हूँ, तुम भारत मॉं के लाडले बनो, भारत के ज्योतिष में इंडिया कहो बैठा है उसका पता लगाओ, कार्य करो, भारत नाम को सम्मान दिलाओ।

पृष्ठ ६ से... जहां जैन प्रतिष्ठान बंद रहे, वहां पूरे देश में विहार कर रहे मुनिश्री सहित सभी जैन संतों ने निर्जला उपवास रखा। बच्चों ने एकासन ब्रत किया। कई जैन साधकों के घरों में चूल्हा नहीं जला, इसके अलावा टीवी पर ही कई लोग आचार्यश्री का अंतिम संस्कार देखते रहे, इस दौरान मप्र, राजस्थान से कई लोग डोंगरगढ़ के लिए भी रवाना हो गए, भक्तों की आंखों में आंसू नहीं थम रहे थे।

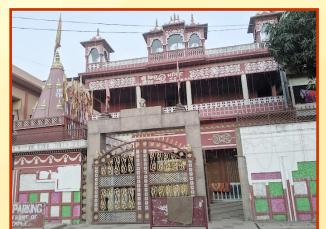
चातुर्मास... सात राज्यों में किए, सबसे ज्यादा मप्र में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने सात राज्यों में चातुर्मास किए, लेकिन इस दौरान सबसे ज्यादा चातुर्मास मध्यप्रदेश में किए, उन्होंने राजस्थान में ७ चातुर्मास किए, उत्तरप्रदेश में १, मध्यप्रदेश में ३७, बिहार (वर्तमान में झारखण्ड) में १, महाराष्ट्र में ६, गुजरात में १ और छत्तीसगढ़ में ३ चातुर्मास किए, जहां भी वे चातुर्मास करते वहां अनुयायियों का मेला लग जाता था। सबसे संयम, तप और त्याग की शिक्षा आचार्यश्री देते थे।

कविता का शौक... कुछ सालों से जापानी कविता लिख रहे थे आचार्यश्री पिछले कुछ सालों से जापानी हायकू (कविता) लिख रहे थे। हायकू जापानी छंद की कविता होती है, जिसमें पहली पंक्ति में ५ अक्षर, दूसरी में ७ और तीसरी में ५ अक्षर होते हैं, संक्षेप में सारागर्भित बहु अर्थ को प्रकट

करने वाली होती है। आचार्यश्री ने ६०० से ज्यादा हायकू लिखे हैं। आचार्यश्री की ज्योतिष, दर्शन और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी काफी रुचि थी। आचार्य श्री के जीवन की एकमात्र इच्छा रही कि भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बने साथ ही भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, आचार्य श्री की यह इच्छापूर्ति को पूर्ण करने का प्रण आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन ने संकल्प के साथ लिया है।

- मैं भारत हूँ

'बिजयनगर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं



Pankaj Agarwal

Mob: 9435141660

Rahul Agarwal

Mob: 9435492982

RAHUL MOTORS

P.O. Bijoynagar, NH-37, Kamrup (R),
Assam, Bharat - 781122

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

देवनागरी भारतीय भाषाओं के लिए सर्वोत्तम लिपि है - बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ●७

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत' को 'भारत' ही बोला जाए'

असम में स्थापित बिजयनगर का श्री विष्णु मंदिर : तब से अब तक



असम में मारवाड़ी समाज का इतिहास काफी पुराना है, किसी जमाने में रोजी-रोटी की तलाश में भटकते हुए हमारे पूर्वज बियावान जंगलों, नदियों, पहाड़ों, हरियाली तथा अकृत प्राकृतिक संपदाओं के धनी पूर्वोत्तर राज्यों में अपना व्यावसायिक भाग्य आजमाने के लिए बसेरा बसाया, बाद में वे यहां के जनजीवन में पूरी तरह रम गये तथा तन-मन-धन से इन प्रदेशों की सेवा कर स्थानीय लोगों का विश्वास भी हासिल कर लिया। पूर्वोत्तर प्रदेशों में आज हालांकि ७ राज्यों की गिनती आती है, लेकिन कभी यह पूरा इलाका सिर्फ असम के नाम से ही जाना जाता था। गुजरते वक्त के साथ विभिन्न कारणों से इसका बंटवारा कर इसे ६ और प्रदेशों में बांट दिया गया। पूर्वोत्तर राज्यों में असम ही सबसे बड़ा तथा सबसे अग्रणी प्रदेश है, इस प्रदेश से मारवाड़ी समाज का भी सदियों से नाता रहा है तथा राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि विभिन्न स्थानों से विभिन्न समय पर आकर बसे लोगों ने इस प्रदेश को प्रगति के सोपान तक पहुंचाने में बहुत ही महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है, जिसे सभी निःसंकोच स्वीकार भी करते हैं।

असम के विभिन्न स्थानों पर बसे मारवाड़ी समाज के लोग, अधिकतर अपने समाज के लोगों की एक बस्ती सी बसा कर रहते आये हैं। असम के बहुत से छोटे शहर व कस्बे मिल जायेंगे, जिहें मारवाड़ी भाईयों ने बसाया व बढ़ाया तथा आज उनकी गिनती बड़े शहरों में की जाती है, यह सब मारवाड़ी समाज के लोगों की लगन, मेहनत व दूरदर्शिता के कारण ही संभव हो पाया।



असम के कामरुप जिले में गुवाहाटी से महज २० किलोमीटर की दूरी पर बसा एक ऐसा ही कस्बा था 'पलाशबाड़ी', जिसे मारवाड़ी भाईयों ने दशकों की कोशिश के बल तक व अध्यवसाय पर बुलंदियों तक पहुंचाया, लेकिन शायद प्रकृति को यह मंजूर नहीं था, इसलिए उसने ब्रह्मपुत्र के जरिये 'पलाशबाड़ी' को ऐसा निगला कि उसका अस्तित्व ही विलुप्त हो गया, उन दिनों 'पलाशबाड़ी' की गिनती पूर्वोत्तर के बड़े व्यवसाय केंद्र के रूप में की जाती थी, लेकिन सन १९५० के विकराल भूकंप के बाद महाबाहु ब्रह्मपुत्र ने अपनी धारा बदली तथा इसे अपने आगोश में ले लिया, किसी जमाने में पूरे असम में अग्रणी शहर में गिने जाने वाले 'पलाशबाड़ी' को न जाने कैसा ग्रहण लगा था कि देखते ही देखते यह नगर ताश के पत्तों की तरह ढहता चला गया और कुछ ही वर्षों में इसका तीन-चौथाई हिस्सा ब्रह्मपुत्र के उदर में समा गया।

तत्कालीन 'पलाशबाड़ी' का मारवाड़ी समाज सिर्फ कारोबार में ही नहीं बल्कि खेल-कूद, धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों, सामाजिक एकता व समन्वय के लिए भी चहुं ओर विख्यात था, इसके जीवंत उदाहरण पलाशबाड़ी के जैन व विष्णु मंदिर थे जो एक ही मकान में बनवाये गये थे। सन १८९९ में पलाशबाड़ी में श्री दिग्म्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर तथा श्री विष्णु मंदिर का निर्माण करवाया गया था, एक ही टीन के मकान में दोनों मंदिरों का निर्माण करवाया गया था। आज धार्मिक असहिष्णुता के युग में उन दिनों शेष पृष्ठ ९ पर...

भारत की मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है, जय शिक्षा का माध्यम 'हिन्दी' हो - पं. रामनारायण मिश्र

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ ८ से... के सामाजिक समन्वय की कल्पना भी करना काफी कठिन



है। दोनों सम्प्रदायों के लोगों के बीच काफी आपसी भाइचारा था तथा दोनों ही समुदाय एक-दूसरे के पर्व-त्योहारों में बराबर हाथ बंटाया करते थे, ज्यों-ज्यों पलाशबाड़ी की जनसंख्या बढ़ती गयी, त्यों-त्यों स्थान की कमी भी अखरने लगी। लगभग सन १९१९ में ‘पलाशबाड़ी’ हाटखोला के उत्तर में दुर्गा पूजा मंडप के पास टीन व लकड़ी के दो मंजिला घर में श्री विष्णु मंदिर की स्थापना की गयी, इसके निचले तल्ले में प्रसिद्ध विद्वान् तथा ज्योतिष के ज्ञाता पंडित लक्ष्मीनारायण शर्मा परिवार रहा करता था तथा ऊपरी तल्ले पर भगवान् की मूर्ति स्थापित की गयी थी। ‘पलाशबाड़ी’ में भाद्रपद मास में मनाये जाने वाले झूलन उत्सव का लोगों में काफी आकर्षण था, जिसके आयोजन में स्व. पूरण मल जैन सक्रिय सहयोग देते थे। पलाशबाड़ी तथा आस-पास के इलाके के लोग भी काफी संख्या में इस उत्सव में सम्मिलित होते थे।

१५ अगस्त सन १९५० को पूर्वोत्तर भारत में आये विकाराल भूकंप के बाद महानद ब्रह्मपुत्र ने अपना रुख ‘पलाशबाड़ी’ की ओर किया तथा मात्र चंद वर्षों में ही इस वाणिज्य केंद्र को अपने उदर में समा लिया। ‘पलाशबाड़ी’ के कटाव के बाद वहाँ के मारवाड़ी समाज ने प्रकृति के प्रकोप के बावजूद बिछुड़ना गंवारा नहीं किया तथा वहाँ से लगभग ५ किमी दूर उपरहाली के पास जमीन का बड़ा प्लाट खरीदकर ‘बिजयनगर’ के नाम से एक नया कस्बा बसा लिया। ‘पलाशबाड़ी’ से विस्थापित हुए दोनों मंदिरों (जैन व विष्णु) को भी ‘बिजयनगर’ स्थानांतरित किया गया। ‘बिजयनगर’ में चूंकि स्थान पर्याप्त था तथा नये कस्बे के रूप में इसे बसाया गया था, अतः समाज ने दोनों मंदिरों को विशाल रूप में बनाने का निर्णय लिया तथा उसी परिकल्पना को सकार



रुप प्रदान करने के परिणाम स्वरूप आज श्री दिग्म्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर तथा श्री विष्णु मंदिर के रूप में दो अनुपम कृतियां ‘बिजयनगर’ में स्थापित होना संभव हो पाया है।

श्री विष्णु मंदिर का इतिहास भी संघर्ष व त्याग के गौरव से महिमामंडित है। ‘पलाशबाड़ी’ में कटाव के बाद श्री विष्णु मंदिर को भी ‘बिजयनगर’ स्थानांतरित कर दिया गया। चंद वर्षों तक इसे पंडित लक्ष्मीनारायण शर्मा के आवास पर ही रखा गया, बाद में श्री अग्रवाल पंचायत ने एक सुंदर व विराट मंदिर बनाने का निर्णय लिया। विशिष्ट समाजसेवी चिरंजीलाल गोयल ने इसकी आधारशिला रख एक नये अध्याय का सूत्रपात दिया।

सर्वप्रथम श्री विष्णु मंदिर का निर्माण काफी छोटे रूप में करने का निर्णय लिया गया था, लेकिन समाज के लोगों के अत्युत्साह तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं की



लगन ने इस योजना का आकार कई गुना तक बढ़ा दिया, बाद में समाज को स्व. गणपत राय बजाज के रूप में एक ऐसा निःस्वार्थ कार्यकर्ता मिला, जिसने अपना तन-मन-धन लगाकर मंदिर निर्माण के काम में खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया, यह भी कितने ताज्जुब की बात है कि आज के क्षुद्रस्वार्थी जमाने में स्व. गणपत राय बजाज सरीखे समाजसेवी भी इस समाज को मिले, जिन्होंने लगभग ३० किमी की बस से यात्रा कर ‘बिजयनगर’ आने व जाने की तोहमत मोल लेकर भी मंदिर निर्माण के कार्य को अमली जामा पहनाया, दिन भर मंदिर निर्माण के कार्य में कामगारों के साथ वे खुद खटते थे, उन्होंने अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा श्री विष्णु मंदिर व अग्रवाल विवाह भवन के निर्माण कार्य में लगा दिया। मंदिर व धर्मशाला के निर्माण कार्य में उन्हें स्व. रंगलाल अग्रवाल, स्व. पंडित लक्ष्मी नारायण शर्मा, शेष पृष्ठ १० पर...

With Best Compliments



Mahavirprasad Jangid
Mob: 9825178103



SK Interiors
V&S Wood Developers
(Plywood & Constructions)

28, Abhishek Complex, Asarwa, Ahmedabad, Bharat - 380016

हिंदी भाषा शताब्दियों से राष्ट्रीय एकता का माध्यम है- बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अवनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ९

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’



यहले मातृभाषा



फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

जरुर देखें मार्गदर्शन करें
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ ९ से... जगदीश प्रसाद चौधरी, स्व. चांदमल अग्रवाल, स्व. भगतराम अग्रवाल, स्व. गोवर्धन प्रसाद अग्रवाल (गुमी), स्व. डूंगरमल अग्रवाल, स्व. रामबिलास अग्रवाल, बुद्धराम अग्रवाल, पुष्पराज अग्रवाल, गीरगाज अग्रवाल, नंदलाल जैन आदि समाज बंधुओं का भी भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। श्री विष्णु मंदिर परिसर में स्थापित श्री बालाजी मंदिर के निर्माण में गुवाहाटी समाजसेवी सांवरमल गोयनका का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 'बिजयनगर' में स्थापित श्री विष्णु मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा भी सन १९६४ में संपन्न हुयी। सुदीर्घ ४० वर्षों की अवधि गुजरने के बाद एकबार फिर इतिहास ने करवट ली तथा 'बिजयनगर' में श्री विष्णु मंदिर प्रांगण में मां दुर्गा दरबार की प्रतिष्ठा की गयी, इसी दरबार में मां दुर्गा की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा



हेतु ७ मई २००३ से १४ मई २००३ तक ८ दिवसीय कार्यक्रमों के साथ विराट महोत्सव का आयोजन किया गया। स्थानीय श्री विष्णु प्रांगण में राम दरबार में भगवान राम, माता सीता तथा लक्ष्मण की मूर्तियां स्थापित की गयी। उनकी बायीं ओर के कमरे में शिवलिंग बनाया गया। दायीं ओर का कमरा विगत ५० से भी अधिक वर्षों से खाली पड़ा था। समाज के लोगों ने इसमें मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापना का विचार किया, दिनांक १० अक्टूबर २००२ को दुर्गा मंदिर की आधारशिला रखी गयी, इसके तत्काल बाद दरबार के निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया गया। दरबार के निर्माण तथा श्री विष्णु मंदिर के जीर्णोद्धार में जहां समाज के सभी लोगों का भरपूर सहयोग रहा, वहां समाज के कर्मठ कार्यकर्ता बजरंगलाल अग्रवाल व कमल कुमार खेमका का विशेष सहयोग रहा। दिन-रात कामगारों के साथ खुद छैनी हथोड़े हाथ में लेकर उन्होंने निर्धारित अवधि में काम को पूरा कर दिखाया।

श्री अग्रवाल पंचायत

जुगल किशोर जैन (अग्रवाल) की अध्यक्षता में प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजन का निर्णय लिया गया। महोत्सव के सफल आयोजन हेतु जुगल



किशोर जैन (अग्रवाल) की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया, जिसे दुर्गा दरबार के निर्माण के सहायतार्थ आयोजित कूपन खेल का संचालन करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इसमें मंत्री के रूप में सुभाष कुमार गोयल को तथा खजांची के रूप में अजय कुमार अग्रवाल को जिम्मेदारी सौंपी गयी। कार्यकारिणी में सुभाष कुमार अग्रवाल, कमल खेमका, बजरंगलाल अग्रवाल, नारायण प्रसाद अग्रवाल, सत्यनारायण अग्रवाल तथा प्रहलाद अग्रवाल को भी सम्मिलित किया गया। मंत्री के रूप में कमल कुमार खेमका तथा संयुक्त मंत्री के रूप में संतोष कुमार सराफ तथा दिलीप कुमार अग्रवाल को भी सम्मिलित किया, इनके अलावा कई उप-समितियों का भी गठन किया गया, जिन्हें विभिन्न विभागों की जिम्मेदारी सौंपी गयी। पूजन विभाग पंडित गोपाल शर्मा को, प्रसाद व भोजन विभाग अशोक अग्रवाल तथा पवन अग्रवाल को, पंडाल विभाग कमल कुमार खेमका को, जनसंपर्क व प्रचार प्रसार विभाग उत्तम कुमार खेमका व राजकुमार झाँझारी को, शोभायात्रा की जिम्मेदारी प्रहलाद अग्रवाल व सुरेश शर्मा को, सांस्कृतिक विभाग प्रदीप खेमका व दिलीप अग्रवाल को, सुरक्षा विभाग रामस्वरूप अग्रवाल को, स्वयंसेवक विभाग अजय अग्रवाल को, स्वास्थ्य विभाग डा. संजय अग्रवाल को, कोषाध्यक्ष नारायण प्रसाद अग्रवाल व सत्यनारायण अग्रवाल को तथा कार्यालय व पूछताछ विभाग संजय अग्रवाल व शंकर अग्रवाल को सौंपा गया।

हालांकि 'बिजयनगर' का अग्रवाल समाज संख्या की दृष्टि से काफी छोटा है लेकिन अपनी युवा-शक्ति के जोश व साहस के बल पर तथा आपसी सामंजस्य, धर्म के प्रति प्रगाढ़ भक्ति तथा दृढ़ इच्छाशक्ति के द्वारा समाज के लोगों ने सीमित साधनों के बावजूद इन्हें बड़े मंदिर का निर्माण कर दिखाया। बिजयनगर के अग्रवाल समाज द्वारा हर वर्ष जलझूलनी एकादशी, झुलन उत्सव, हनुमान जयंती, जन्माष्टमी, होलिका दहन आदि पर्व बड़े भक्तिभाव से मनाये जाते हैं। विशेषकर हनुमान जयंती के अवसर पर निकाली जाने वाली शोभायात्रा इलाके के लोगों के लिए एक यादगार अवसर होता है।

- राजकुमार झाँझारी



Babita Sunil Agarwal

सचिव अ.भा. मारवाड़ी महिला सम्मेलन, बिजयनगर शाखा

Mob: 94010 03223

C/o Gigraj Agarwal, C Line, Near Vishnu Temple,
Bijay Nagar, Assam, Bharat - 781122

भारत की शान हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १०

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर, बिजयनगर

श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर : 'बिजयनगर' का मरुप जिले का एक कस्बा है। यह ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण तट पर है। 'बिजयनगर' राष्ट्रीय राजमार्ग ३७ पर स्थित है। श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर वी. सं. २०१४ में स्थापित हुआ। 'बिजयनगर' मंदिर जी का परिसर काफ़ी बड़ा और वृहद है। मंदिर जी में मूलनायक के रूप में श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ जी की करीब २०० साल पुरानी एक भव्य और विशाल मनोहारी प्रतिमा विराजमान है, साथ ही तीर्थकर चंद्रप्रभु जी, मुनिसुत्रतनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर स्वामी जी की भी प्रतिमाएं विराजित हैं। मंदिर जी के ऊपर के तल पर काफ़ी वृहत समवसरण की रचना की गई है जो पूरे असम का, नॉर्थ इस्ट का एक मात्र समवसरण 'बिजयनगर' में है। समवसरण में कुल २३६ प्रतिमाएं विराजमान हैं।



With Best Compliments



Deepak Goyal
Founder
Mob: 9879514616

SAMVIDYUT
ENERGIES INDIA PVT LTD

"Let's Shine Together"

806, Trividh Chambers, Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002

Email: samvidyutenergies@gmail.com | info@samvidyut.com

Phone : 0261-2366842 | Web: www.Samvidyut.com

भारत की शान हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ११

नीम लगाओ  पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत' को 'भारत' ही बोला जाए'



गंगासागर

गंगासागर (सागर द्वीप या गंगा-सागर-संगम भी कहते हैं) बंगाल की खाड़ी के कॉण्टीनेण्टल शौल्क में कोलकाता से १५० कि.मी. (८०मील) दक्षिण में एक द्वीप है, यह भारत के अधिकार क्षेत्र में आता है और पश्चिम बंगाल सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में है, इस द्वीप का कुल क्षेत्रफल ३०० वर्ग कि.मी. है, इसमें ४३ गांव हैं, जिनकी जनसंख्या १,६०,००० है, यहाँ गंगा नदी का सागर से संगम माना जाता है।

इस द्वीप में ही रॉयल बंगाल टाइगर का प्राकृतिक आवास है। यहाँ मैन्योव की दलदल, जलमार्ग तथा छोटी छोटी नदियां व नहरें हैं, इस द्वीप पर ही प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ है, प्रत्येक वर्ष 'मकर संक्रान्ति' के अवसर पर लाखों हिन्दू श्रद्धालुओं का तांता लगता है, जो गंगा नदी, सागर के संगम पर, नदी में स्नान करने के इच्छुक होते हैं। यहाँ एक मंदिर भी है जो कपिल मुनि के प्राचीन आश्रम स्थल पर बना है। श्रद्धालु कपिल मुनि के मंदिर में पूजा अर्चना भी करते हैं। पुराणों के अनुसार कपिल मुनि के श्राप के कारण ही राजा सगर के ६० हज़ार पुत्रों की इसी स्थान पर तत्काल मृत्यु हो गई थी। उनके मोक्ष के लिए राजा सगर का वंश भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाए थे और गंगा यहाँ सागर से मिली थी। कहा जाता है कि एक बार 'गंगा सागर' में डुबकी लगाने पर १० अश्वमेध यज्ञ और एक हज़ार गाय दान करने के समान फल मिलता है। जहाँ गंगा-सागर का मेला लगता है, वहाँ से कुछ दूरी उत्तर वामनखल स्थान में एक प्राचीन मंदिर है, उसके पास चंदनपीड़िवन में एक जीर्ण मंदिर है और बुडबुड़ीर तट पर विशालाक्षी का मंदिर है।

कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट का यहाँ एक पायलट स्टेशन तथा एक प्रकाशदीप भी है। पश्चिम बंगाल सरकार, सागर द्वीप में एक गहरे पानी के बंदरगाह निर्माण की योजना बना रही है। गंगासागर तीर्थ एवं मेला महाकुंभ के बाद मनुष्यों का



दूसरा सबसे बड़ा मेला हर वर्ष में एक बार लगता है।

गंगा-डेल्टा, सुंदरबन का उपग्रह चित्र, यहाँ बीच में गंगा-सागर द्वीप स्थित है। यह द्वीप के दक्षिणतम छोर पर गंगा डेल्टा में गंगा के बंगाल की खाड़ी में पूर्ण विलय (संगम) के बिंदु पर लगता है। बहुत पहले इसी स्थान पर गंगा जी की धारा सागर में मिलती थी, किंतु अब इसका मुहाना पीछे हट गया है। अब इस द्वीप के पास गंगा की एक बहुत छोटी सी धारा सागर से मिलती है। यह मेला पांच दिन तक चलता है, इसमें स्नान मुहूर्त तीन ही दिनों का होता है। यहाँ गंगाजी का कोई मंदिर नहीं है, बस एक मील का स्थान निश्चित है, जिसे मेले की तिथि से कुछ दिन पूर्व ही संवारा जाता है। यहाँ स्थित कपिल मुनि का मंदिर सागर बहा ले गया, जिसकी मूर्ति अब कोलकाता में स्थापित है। मेले से कुछ सप्ताह पूर्व पुरोहितों को पूजा अर्चना शेष पृष्ठ १३ पर...

यदि बढ़ाना है भारत को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

पृष्ठ १२ से... का अवसर मिलता है। अब यहाँ एक अस्थायी मंदिर बना है, इस स्थान पर कुछ भाग चार वर्षों में एक बार ही बाहर आता है, शेष तीन वर्ष जलमग्न रहता है, इस कारण ही कहा जाता है:



बाकी तीरथ चार बार, गंगा-सागर एक बार

वर्ष २०२४ की 'मकर संक्रांति' के अवसर पर लगभग ३ लाख लोगों ने यहाँ स्नान किया। ऐसा कुंभ मेले के कारण हुआ। २०२२ में पांच लाख श्रद्धालुओं ने सागर द्वीप में स्नान किया था।

पौराणिक मान्यता

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, स्वर्ग से धरती पर गंगा का अवतरण अनगिनत घटनाओं से जुड़ा हुआ है, जिनकी कथाओं को हम सदियों से सुनते



आ रहे हैं। इस महान नदी के संगम पर वो पावन स्थल है, जहाँ श्रद्धालुओं का मानना है कि वहाँ उन्हें मोक्ष मिल सकता है, इस दिव्य तीरथस्थल के बारे में और अधिक जानने के लिए प्राचीन पौराणिक कथाओं के पत्र पढ़ते हैं:

'गंगासागर' के वक्षस्थल में कपिल मुनि का मंदिर है। भगवान विष्णु का अवतार माने जाने वाले इस महान संत का जन्म कर्दम मुनि एवं देवाहुति देवी के यहाँ हुआ था। पौराणिक कथाओं को मानें तो कर्दम मुनि अपनी एकमात्र इच्छा की पूर्ति के लिए आजीवन भगवान विष्णु के मार्ग पर पूरी निष्ठा के साथ चलते रहे ताकि भगवान विष्णु उनके यहाँ पुत्र के रूप में जन्म लें, अन्ततः कपिल मुनि के जन्म के साथ उनकी यह इच्छा साकार भी हुई।

राजा सगर भी एक महत्वपूर्ण पात्र है, 'गंगासागर' का नाम पड़ने में जिनका नाम स्वयं एक अनुप्राणित स्रोत है। अयोध्या के राजा सगर अपने १०० वें अश्वमेध यज्ञ का आयोजन कर रहे थे, जब भगवान इन्द्र खलल डालने आ पहुँचे, क्योंकि राजा सगर इतनी असीम धर्मपरायणता प्राप्त कर लेते तो उनका

सिंहासन डोल उठेगा, इसी डर से भगवान इन्द्र ने यज्ञ के घोड़े को कपिल मुनि आश्रम (पाताल) के नीचे छिपा दिया। कुपित होकर राजा सगर ने अपने ६०,००० पुत्रों को, गायब हुए घोड़े की तलाश में भेज दिया, उनके पुत्रों ने सागरद्वीप में खोज करते हुए उपद्रव मचाने लगे और आखिरकार कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचे। संत उस समय ध्यानमग्न थे जब सगर के पुत्रों ने उनका ध्यान भंग करते हुए उन पर चोरी का आरोप लगाया, कपिल मुनि ने झलक भर की दृष्टि से राजा सगर के पुत्रों को राख के ढेर में बदल दिया। कई वर्षों के बाद कपिल मुनि के मार्गदर्शन में राजा सगर के पौत्र ने लम्बे समय तक तपस्या करते हुए गंगा को स्वर्ग से धरती पर उतरने के लिए मनाया। महेश्वर (शिव) की जटाओं से निकलकर देवी गंगा हिमालय से बहती हुई नीचे आई एवं सगर के पुत्रों के पापों को धोया।

वही गंगा जिसने ६०,००० लोगों की आत्मा को मुक्ति दी, अब केवल भारत ही नहीं, अपितु पूरे विश्व के लोगों को यहाँ इकट्ठा होने एवं पावन स्नान के लिए अनुप्राणित करती है। ये सब कुछ श्रद्धालुगण एक ही लक्ष्य से करते हैं कि उन्हें मोक्ष मिले, जो आत्मा की मुक्ति का परम प्रतीक है।

ज्योतिषीय महत्व

गंगासागर मेला 'मकर संक्रांति' की शुभ अवधि के दौरान मनाया जाता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार संक्रांति सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में आगमन का सूचक है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार 'मकर संक्रांति' उस समय शुरू होती है जब सूर्य देव (सूर्य देवता) मकर राशि में प्रवेश करते हैं और वहाँ एक महीने तक रहते हैं। एक राशि से दूसरे राशि में सूर्य के इस परिवर्तन का एक मजबूत ज्योतिषीय महत्व है क्योंकि 'मकर' शनि का घर है और शनि (सूर्य देव के पुत्र) एवं सूर्य दोनों के बीच शत्रुता का संबंध है, परंतु मकर संक्रांति के दौरान सूर्य पुत्र के प्रति अपना क्रोध भूल जाते हैं और सौहार्द एवं सद्बावपूर्ण संबंध अभिव्यक्त करते हैं, इसलिए यह एक शुभ अवधि का प्रतीक है जो रिश्तों के महत्व को उजागर करती है।

'मकर संक्रांति' लंबे समय तक चली सर्दी के अंत को दर्शाती है और फसलों के मौसम का स्वागत करती है। हिंदू संस्कृति के अनुसार उमीदों का यह मौसम, नई शुरुआतों का यह मौसम बदलाव की ओर पवित्र कदम बढ़ाने का संकेत है। अशुभ काल (ठंड भरी सर्दी और लंबी रात) का अंत होता है और एक आदर्श मौसम का शुभारंभ होता है।

शेष पृष्ठ १४ पर...

'गंगासागर' के इतिहास प्रकाशन पर
 'मैं भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं



R.D. Tiwari
 Vice President- HR & Admin
 Mob: 9874943027

BENGAL ENERGY LIMITED

NH-60, Near Makrampur Toll Plaza, Mouza,
 Dauka P.O.: Tentulmuri, Midnapore, West Bengal, Bharat- 721 437
 Ph: +91 3222 236692-98 | Fax : +91 3222 236697
 Email: ramdayal.tewari@bengalenergy.in | Web: www.bengalenergy.in

आओ मिलकर हिंदी का सम्मान करें 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने की प्रतिज्ञा करें - बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी'

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १३

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

पृष्ठ १३ से... इस अवधि में मौसम में बेहतर बदलाव नजर आते हैं। यह मेला शीतकालीन संक्रान्ति के दौरान आयोजित होता है, जब दिन बड़े होने लगते हैं और रातें छोटी होने लगती हैं। यह परिवर्तन ज्योतिष प्रथाओं और खगोलीय गतिविधियों के बीच एक अंतर्निहित घनिष्ठ संबंध को प्रस्तुत करता है। वैदिक काल से ही ज्ञान की यह प्राचीन प्रणाली भारतीय सभ्यता को अपने मार्गदर्शन से रौशन करती रही है और सबसे श्रद्धाजनक एवं प्रेरणादायी तथ्य यह है कि यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है!

सामाजिक महत्व

इसमें कोई दो राय नहीं है कि धर्म हमारी भूमि की संस्कृति से बड़ी गहराई



से जुड़ा हुआ है एवं 'मकर संक्रान्ति' को आयोजित गंगासागर इन धार्मिक मान्यताओं से अछूता नहीं रहा है।

'गंगासागर' एक तीर्थस्थल से कहीं बढ़कर है, यह आस्था के साथ भावनाओं का अन्तर्मिलन है, यह जीवन के परम आनंद का संगम है।

भारत के कई हिस्सों में यह फसल की कटाई का समय है तो कुछ हिस्सों में इस ऋतु में फसलों की बोआई भी की जाती है, तभी तो लोग सूर्य देव के सम्मुख सम्मान के साथ श्रद्धा अर्पित करते हैं, जिन्होंने मानव को एक आदर्श जलवायु का उपहार प्रदान किया है, इसके अतिरिक्त वे धरती, फसल एवं पशुओं के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

इस अवसर पर भारत के विभिन्न परिवारों में विविध ताज़ा सामग्रियों जैसे की तिल और गुड़ से मीठे व्यंजन बनाये जाते हैं। आनंद का यह माहौल केवल

खाने पीने की चीज़ों तक ही सीमित नहीं है, पतंगों को उड़ाने की एक महत्वपूर्ण परंपरा चली आ रही है। मूल रूप से यह उत्तर-भारत की एक प्रचलित प्रथा है जो अब भारत के कई हिस्सों में लोकप्रिय होने के साथ फैल चुकी है। भारत की राजधानी दिल्ली में तो १४ जनवरी हर साल 'पतंग दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

अतएव 'गंगासागर मेले' के लिए कह सकते हैं कि यह हमारी भूमि के सामाजिक ताने-बानो से गहराई से जुड़ा हुआ है, यह संस्कृति का एक अपरिहार्य अमूल्य हिस्सा है जो हमें एक साथ एक बंधन में जोड़कर रखता है।

गंगासागर के कर्मकाण्ड

सागर के तट पर जहाँ तक आपकी नज़रें जाती हैं, आपको श्रद्धालुओं का सैलाब नज़र आता है, जनवरी की घनी हवाएं मिट्टी की महकती खुशबू का एहसास देती है। मंत्रों के सुर में घंटियों की गूंजती खनखनाहट चारों ओर एक आध्यात्मिक परिवेश का सुजन करती है, जब आप एक ही झलक में इन सभी चीज़ों को एक साथ निहारते हैं, तो खुद ही समझ जाते हैं कि आप 'गंगासागर' में हैं।

'गंगासागर' के धार्मिक रिवाजों में सबसे महत्वपूर्ण है पावन जल में प्रातःकाल के समय स्नान करना। यह तो लाखों श्रद्धालुओं की अटूट आस्था है जो उन्हें



यहाँ की ठिठुरती सर्दियों में भी हर पल अनुप्राणित करती है, सबसे पहले, नाग साधुओं समेत हिमालय से आए संत-संन्यासी शाही स्नान करते हैं, इसके बाद एकत्रित भक्तगण 'गंगासागर' स्नान का परम आनंद लेते हैं, उनकी सभी आशाएँ और प्रार्थनाएँ इसी लक्ष्य से प्रेरित रहती हैं कि उन्हें 'मोक्ष' मिले जो आत्मा की मुक्ति का परम प्रतीक है।

श्रद्धालुगण सूर्य देवता की भी उपासना करते हैं एवं अपने पूर्वजों की याद में और इस सांसारिक मोह-माया से अपनी आत्माओं को मुक्ति दिलाने की चाह में धार्मिक संस्कारों का पालन करते हैं जिसे 'तर्पण' कहा जाता है। इस धार्मिक कृत्य के बाद भीड़ कपिल मुनि के मंदिर में एकत्रित होकर 'महापूजा' और 'यज्ञ' अनुष्ठान में सम्मिलित होती है, इस प्रकार इस तेजस्वी संत को याद करते हुए उनके आशीर्वाद की कामना की जाती है। नाग साधु भी उनके पास पहुँचे श्रद्धालुओं को अपने अद्भुत कृत्यों से आशीर्वाद देते हैं जो हमें विस्मित रूप से अनुप्राणित करते हैं।

संध्या बेला में, दीये (मिट्टी के दीप) जलाये जाते हैं एवं सुशोभित नदी में इन्हें प्रवाहित किया जाता है। संध्याकालीन आरती की जाती है जिसकी वंदना से हवाएँ धार्मिक भावों से गुंजायमान हो उठती है। नदी में प्रवाहित हो रहे लाखों जलते दीये मानवता की नैसर्गिक यात्रा की याद दिलाते हैं।

**'गंगासागर' के इतिहास प्रकाशन पर
'मेरा भारत हूँ' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं**



M. L. Shaw

Mob: 92315 22796

B.Com., B.A., LL.B. (Kol.), Advocate
NOTARY PUBLIC, GOVT. OF WEST BENGAL

Email: mlshaw1957@gmail.com



Chamber: 13A, Halder Bagan Lane, (Near Deshbandhu Park),
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 004
Mon. to Fri. (7.00 p.m. to 9.00 p.m.)

Sealdah Court Complex, Room No. 301, Kolkata, West Bengal, Bharat - 14 K.M.C.
Assessment & Bldg. Tribunal, Kolkata-87

Resi.: 39C, Bijoli Dutta Lane, Kolkata, West Bengal, Bharat - 700037 (Duttabagan Xing)

मातृभाषा 'हिन्दी' की यथाशक्ति सेवा और भक्ति-आराधना करना हमारा परम कर्तव्य है - पं गोविन्द नारायण मिश्र

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १४

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत' ही बोला जाए'

ब्रह्माण्ड रचयिता, भुवन पुत्र, शिल्प विज्ञान के प्रवर्तक शिल्पाचार्य श्री विश्वकर्मा जी का संक्षिप्त परिचय



22 फरवरी 2024

विश्वकर्मा जयंति पर विशेष

नारायण की आज्ञा से ब्रह्माजी ने इस पृथ्वी का निर्माण किया तो उन्हें इसे स्थिर रखने की भी चिन्ता हुई, जब उन्होंने इसके लिए नारायण से स्तुति की तो स्वयं नारायणजी ने विराट विश्वकर्मा जी का रूप धारण कर डगमगाती पृथ्वी को स्थिर किया, पृथ्वी के स्थिर हो जाने के पश्चात विश्वकर्मा ने विभिन्न लोकों की रचना की।

समस्त सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने विभिन्न युगों में प्रलय के पश्चात सृष्टि की पुनर्रचना की तथा हर युग में विश्वकर्मा जी ने अपना योगदान दिया। विश्वकर्मा कोई नाम नहीं, यह तो पदवी ‘उपाधि’ मात्र है, जिस-जिस ऋषि-महर्षि ने शिल्प वेद पढ़कर नये विज्ञान का आविष्कार किया, वह ऋषि-महर्षि आचार्य के द्वारा ‘विश्वकर्मा’ पद पर अभिशिष्ट हुए, जिस प्रकार आदिशंकराचार्य जी के पश्चात उनके मठ पर अभिशिष्ट हुए, प्रत्येक मठाधीश क्रमशः परम्परा से शंकराचार्य ही कहलाते हैं, चाहे उनका निजी नाम कुछ भी क्यों न हो, इस प्रकार से आरम्भ काल से आज पर्यन्त अनेक विश्वकर्मा हुए हैं,

प्रस्तुत है विवरण:

- जिस परमात्मा ने समस्त ब्रह्माण्ड को रचा और शिल्पविद्या की मूलपुस्तक अथर्ववेद का प्रकाशन किया वे अनादि ‘विश्वकर्मा’ हैं।
- जिस परमात्मा ने अंगिरा को शिल्पविद्या का अधिकारी समझ उनके हृदय में शिल्पविद्या की मूल पुस्तक अथर्ववेद का प्रकाशन किया, हमारे वंश में आदि विश्वकर्मा भगवान अंगिरा हुए और सृष्टि के आरम्भ में महर्षि अंगिरा की उत्पत्ति अग्नि नामक परमात्मा से हुई जो अग्नि शिल्प विद्या का मूल साधन है यथा ये ब्रह्मा मानस पुत्रों में से थे। अग्नि के पुत्र अंगिरा के आग्नेय संज्ञा वाले आठ पुत्र हुए, बृहस्पति, उत्थ्य, आपत्यद्ध, पथस्य, शासन, धोर, विरूप,

सर्वत और सुधन्वा। अंगिरा वंश में आदि शिल्पाचार्य विश्वकर्मा हुए। विश्वकर्मा, संस्कृत साहित्य में अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, प्रथम अर्थ उस विराट शक्ति का बोधक है जिसने सृष्टि को रचा, द्वितीय अर्थ है। अंगिरा वंश के भुवन का पुत्र विश्वकर्मा, जो शिल्प के प्रवर्तक हुए तथा तृतीय अर्थ है विश्वकर्मा उपाधि, जो विभिन्न कार्यों में दक्ष होने के कारण अनेक व्यक्तियों को प्रदान की गई, इसके अतिरिक्त आत्मा, वाणी, प्राण, आदित्य, त्वष्टा तथा प्रजापति के अर्थ में भी विश्वकर्मा शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रथम तीन प्रकार के विश्वकर्माओं का वर्णन मिले-जुले रूप में करने से विश्वकर्मा का यथार्थ स्वरूप हृदयंगम नहीं हो सका, अतः हमें उसके यथार्थ स्वरूप को समझने का प्रयत्न करना है। ब्रह्म ऋषि अंगिरा के आप्त्य ऋषि हुए और आप्त्य के पुत्र भुवन तथा भुवन के पुत्र विश्वकर्मा हुए। आश्वलायन “सर्वालुक्रमणिका” व्याख्याकार षड्गुरुभाष्य के अष्टम अध्याय में लिखा है कि भुवन नाम आप्त्य पुत्र का है और भुवन का पुत्र होने के कारण विश्वकर्मा का अंगिरस वंश व ऋषि गौत्रत्व है।

ऋग्वेद दशम मण्डल के सूक्त, यजुर्वेद अध्याय १७ के मंत्र, एतरेय ब्राह्मण के भाष्यकार सायणाचार्य ने भी विश्वकर्मा जी का, भुवन पुत्र के रूप में अनेक जगह उल्लेख किया गया है। भुवन का यही पुत्र विश्वकर्मा सब शास्त्रों में देवताओं का शिल्पी कहलाया है, विश्वकर्मा और उनकी सन्तान को विद्वान लेखकों ने विश्वकर्मा को भुवन का पुत्र माना है, इन सब प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्वकर्मा भुवन के पुत्र, आप्त्य के पौत्र तथा अंगिरा के वंश में हुए। वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में केवल भुवन पुत्र विश्वकर्मा के ही प्रमाण मिलते हैं, अन्य किसी विश्वकर्मा के नहीं।

विश्व मेदिनी कोष के अनुसार ‘सुधन्वा’ विश्वकर्मा थे उनके तीन पुत्र हुए, उनमें से ऋभु शिल्पी हुए। ब्रह्माण्ड पुराण में अंगिरा के सात पुत्रों में से ‘सुधन्वा’ के अलावा आप्त्य के एक भुवन नामक पुत्र हुआ जो ‘भुवन ऋषि’ के नाम से विख्यात हुए। आश्वलायन सर्वानुक्रमणिका व्याख्याकृत श्री षड्गुरुभाष्य के आठवें अध्याय में लिखा है कि भुवन ऋषि के भौमन विश्वकर्मा हुए।

विश्वकर्मा भगवान अंगिरा वंशीय होने के आधार पर शिल्पी अंगिरा वंशी हैं, सबमें मुख्य होने से ज्यादा प्रसिद्ध ये ही हैं। ऋषि अंगिरा, उपाध्य, भुवन व भौमन, ये सारे के सारे शिल्पी और मंत्र अष्ट ऋषि हुए हैं।

भृगु पुत्र शुक्लाचार्यजी और ऋषि सायं की बेटी सोमया नाम की स्त्री से सूर्य तेज के समान त्वष्टा नामक पुत्र हुए, यही शिल्प विद्या के द्वारा विश्वकर्मा हुए। महाभारत में मय नामक विश्वकर्मा हुए, धर्म ऋषि के पोते अष्टमवसु प्रभास को अंगिरा की पुत्री व देवताओं के गुरु बृहस्पति की बहन विश्रुता/भुवना व्याही गई, इनके पुत्र विश्वकर्मा हुए। भुवनपुत्र विश्वकर्मा ही आदि शिल्पाचार्य हैं, काल की दृष्टि से भी भुवन पुत्र विश्वकर्मा ही शोष पृष्ठ १६ पर...

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १५

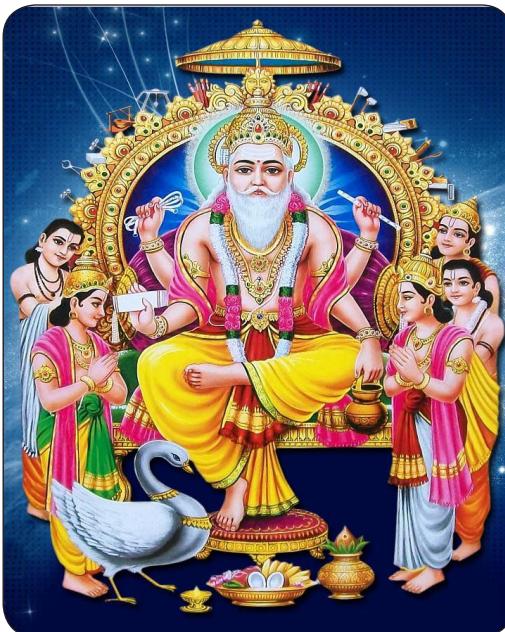
नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’

पृष्ठ १५ से... आदि शिल्पाचार्य हैं और वे ही सर्वप्रथम हुए हैं। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ, श्री विश्वकर्मा के ये पंचपुत्र पंचविधाता के नाम से विख्यात हैं, इनके पांच शिल्प कर्म यज्ञकर्म हैं जो पवित्र एवं लोक हितकारी हैं। शिल्प देवकर्म, ब्राह्मण कर्म हैं, इन शुभ शिल्पकर्मों के करने वाले सभी शिल्पकार पूज्य एवं वंदनीय हैं। भगवान् विश्वकर्मा सही अर्थ में देवता और शिल्प विज्ञान के आदि प्रवर्तक हैं जिन्होंने श्रम और नियम का प्रवर्तन कर जगत का मनोहर रूप बनाया है, ये ही सर्वप्रथम श्रमिक, नियामक हैं जिन्होंने श्रम और कठोर साधना से पंचतत्वों की रचना कर सम्यक सृष्टि का निर्माण नियमन किया है। एतदर्थ वेदों से लेकर महाकवि तुलसी कृत रामायण पर्यंत सभी मान्य ग्रन्थों में इनका उल्लेख मिलता है। बड़े आदर के साथ ऋषि मुनि और महात्माओं ने जगन्नियंता, विराट, विष्णु, शिव, त्वष्टा, नारायण, विश्वरूप, कश्यप, वाचस्पति, हिरण्यगर्भ, परमब्रह्म, जगदगुरु, शिल्पाचार्य, देवाचार्य, विश्वकर्मा विशारद, विश्वामी और सर्वज्ञ आदि सम्मान सूचक शब्द कहकर इनकी स्तुति गायी है।

विश्वकर्माजी की हम सभी आराध्य देव के रूप में पूजा करते हैं, उनका परिचय



जिन्हें कर्म में विश्वास है,
विश्वकर्मा जी उनके पास हैं
विश्वकर्मा जयंती की शुभकामनाएं



भीकाराम जांगिड
Mob: 9822214760

गोकुल नगर सर्वे नंबर ५८,
शिक्षक सोसाइटी गली क्रमांक ३, पुणे, महाराष्ट्र, भारत- ४११०४८

पर्यावरण को बचाओ, हिंदी को अपनाओ, भारत को समृद्ध बनाओ-बिजय कुमार जैन
आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १६
नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

विश्वकर्मा शब्द अनेकार्थी है। आत्मा, परमात्मा, सूर्य अथर्ववेद, ऋषि आदि अनेक अर्थों में विश्वकर्मा शब्द प्रयोग किया जाता है, यहां हम निर्माण के देवता विश्वकर्मा विषय पर लिख रहे हैं।

देव श्रेणी के महापुरुषों प्राचीन कालीन ऋषि मुनियों आदि की वशावली पुराणों में मिलती है, निर्माण का देवता आदिकालीन ऋषियों महर्षियों की श्रेणी में आता है।

धर्म ऋषि के पोते अष्टम वसु प्रभासजी को अंगिरा की पुत्री विश्रुता, जो ब्रह्मा वादिनी थी, ब्याही गई, जो भुवना नाम से भी प्रसिद्ध है। प्रभास वसु के पुत्र विश्वकर्मा नाम से विख्यात हुए। माघ मास में शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के पुण्य दिन पुनर्वसु नक्षत्र के अठाइसवें अंश में विश्वकर्माजी ने जन्म लिया। भविष्य पुराण, स्कन्द पुराण के अतिरिक्त वशिष्ठ ने भी विश्वकर्मा की जन्मतिथि का स्पष्ट उल्लेख किया है।

इसका आधार मदनरत्न वृद्ध वशिष्ठ पुराण का यह श्लोक है:-

माघे शुक्ल त्रयोदश्यां दिवा पुण्ये पुनर्वसौ
अष्टाविंशांति में जातो विश्वकर्मा भवानि च

अर्थात्: शिवजी बोले हे पार्वती! माघ मास के शुक्ल पक्ष में त्रयोदशी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र के अठाइसवें अंश में विश्वकर्मा के रूप में जन्म धारण करता है, इस प्रमाण में न केवल तिथि का उल्लेख मिलता है अपितु नक्षत्र और उसके अंश की भी जानकारी है। भारत भर में सर्वाधिक स्थानों पर इसी दिन विश्वकर्मा का जन्म दिवस मनाया जाता है। विश्वकर्माजी निर्माण के देवता माने जाते हैं, अब तक यह स्पष्ट हो गया है कि विश्वकर्मा जी ने लोक कल्याण के पावन उद्देश्य से प्रेरित होकर अपने शिल्प नैपुण्य से अनेक वस्तुओं की रचना की, अपने उस शिल्पविज्ञान एवं शिल्प नैपुण्य को आगे आगे वाली सन्तानि के निमित्त चिरस्थानी करने के लिये तथा आगे भी उसका प्रयोग कर मनुष्य को ऐश्वर्यशाली बनाने के लिये उस ज्ञान को विश्वकर्मा ने व्यवस्थित रूप प्रदान करते हुए अनेक शिल्प शास्त्रों की रचना की।

शिल्पशास्त्रों की दृष्टि से इन्जीनियरिंग विद्या पर सर्वप्रथम अधिकारिक रचना है, इसे अथर्ववेद के उपवेद की संज्ञा प्राप्त है, यह विश्वकर्मा निर्मित है इसका उल्लेख पूर्व में हो चुका है, वस्तुतः यह सम्पूर्ण शिल्पशास्त्र का समुच्चय है, महर्षि दयानन्द ने भी सब शिल्पशास्त्रों में इसी को सर्वाधिक प्रमाणिक माना है, इस शिक्षा की अन्तिम परिपक्व अवस्था में अन्य सब ग्रन्थों से अधिक समय रखते हुये ६ वर्ष का रखा है तथा इन ६ वर्षों में पढ़कर विमान तथा भूगर्भादि विद्याओं को साक्षात् करना बताया है।

विश्वकर्मा ने समस्त शिल्पविज्ञान को चतुर्विधि विभाजन कर फिर उनका अवान्तर भेद कर, दस शास्त्रों में निरूपण किया है, उत्पादन की दृष्टि से 'कृषि, जल तथा खनिज' तीन विभाग हैं। आवास की दृष्टि से वास्तु, प्रकार तथा नगर रचना-ये तीन विभाग हैं।

आवागमन के साधनों की दृष्टि से रथ, नौका तथा विमान, ये तीन विभाग हैं, अन्य सभी प्रकार के यंत्रों का चौथा यंत्र विभाग है, इस प्रकार समस्त शिल्प विज्ञान का निम्नलिखित नौ शास्त्रों के अन्तर्गत शेष पृष्ठ १७ पर...

जिन्हें कर्म में विश्वास है,
विश्वकर्मा जी उनके साथ हैं
विश्वकर्मा जयंती की शुभकामनाएं

Santlal Sharma

Mob: 9845077946



SMS INTERIORS
Complete Interior Solutions

#3, OmShakti Temple Main Road,
Banjara Layout, Kalkere Village, Bangalore, Karnataka, Bharat - 560043
Email Id: smsinteriorsblr@gmail.com, manishinteriors@gmail.com

पृष्ठ १६ से... प्रतिपादन किया गया है:

१. कृषि शास्त्र, २. जल शास्त्र, ३. रस्ता शास्त्र, ४. नौका शास्त्र, ५. विमान शास्त्र, ६. वास्तु शास्त्र, ७. प्रकार शास्त्र, ८. नगर रचना शास्त्र, ९. यन्त्र शास्त्र। इन सभी विषयों पर विश्वकर्मा ने १२ सहस्र ग्रन्थ लिखकर शिल्पविज्ञान अथर्ववेद को सम्पूर्ण किया, जो कलयुग में घटकर उन सबका समावेश चार सहस्र ग्रन्थों में हो गया। विश्वकर्मा रचित इन शिल्पशास्त्र के ग्रन्थों में केवल पाँच-सात ग्रन्थ ही उपलब्ध हैं।

शोषणाहित अर्थव्यवस्था के प्रवर्तक तथा अर्थव्यवस्था की तीन पद्धतियों की दृष्टि से भी विश्वकर्मा जी को भारतीय समाज व्यवस्था में एक अनुपम स्थान प्राप्त है। विश्वकर्मा के इस वैशिष्ट्य की ओर अभी विद्वानों का कम ध्यान गया है परन्तु विश्वकर्मा पद्धति पूर्ण एवं आदर्श है।

भगवान् श्री विश्वकर्मा ने देवताओं के सभी अस्त्र-शास्त्र, आभूषण, अलंकार, सभी विमान तथा श्रेष्ठ प्रासादों को निर्माण किया। अद्वितीय पुष्टक विमान के कर्ता अद्भूत शिल्पी प्रजापति श्री विश्वकर्मा हैं। महाप्रभु-जगतपिता ब्रह्माजी की प्रेरणा से ही श्री विश्वकर्मा ने पुष्टक विमान का निर्माण किया, जिसकी रचना को सौन्दर्य, कला, शक्ति आदि की दृष्टि से नापा नहीं जा सकता। पारिजात आदि दिव्य पुष्टयों के चूर्णों से अनेक प्रकार की कलाकृतियों तथा भव्य दृश्यों से सुशोभित होने के कारण ही यह पुष्टक विमान कहलाता है।

विश्व के कर्म देवता और इसी देवता की एक संतान सुधार-समाज एक योग्य देवता की योग्य संतान, असंभव को संभव बनाने वाली एवं नित्य नई वस्तु से दुनिया को परिचय कराने वाली सुधार जाति, आज के इस प्रगतिशील युग में सभी की एक ही राय है कि सुधार समाज के किसी भी व्यक्ति को यह भगवान्

की देन है कि वह किसी भी कार्य को इतने अच्छे तरीके से कर सकता है कि जितना अन्य व्यक्ति नहीं, साथ ही यह कहावत भी प्रचलित है कि सुधार का बेटा कभी भूखा नहीं मरता अर्थात् इसी समाज के प्रत्येक सदस्य में कोई एक विशेष योग्यता अवश्य होती है। आज किसी भी क्षेत्र में देखा जाये तो इस जाति का कोई न कोई सदस्य वहां मौजूद है, यही नहीं बल्कि इस क्षेत्र में अपनी योग्यता के कारण चर्चित भी है, यह अतिशयोक्ति नहीं बल्कि एक निर्विवाद सत्य है, इतनी विशेषताओं से परिपूर्ण होने के बावजूद क्यों यह समाज अपने उच्च सामाजिक मूलयों एवं परम्पराओं को तिलांजलि दे रहा है, जहां एक और युवा वर्ग अपने खान-पान, रहन-सहन एवम् आचार में निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर है, वहीं दूसरी और प्रौढ़ एवं वृद्ध सज्जन वर्ग में एक गहरी खाई उत्पन्न हो रही है।

हमें भी कुछ बनना है, शोषित एवं मजदूर नहीं, बल्कि पोषक एवं निर्देशक बनना है, हमारे प्रदुषित मन को साफ कर जाति में समाज कंटकों के कारण उत्पन्न ईर्ष्या-भावना एवं गुटबन्दी को मिटाना है, आज शिक्षित वर्ग का यह नैतिक कर्तव्य बन गया है कि समाज में इस तरह की चेतना पैदा करें, जिससे सुधार की लहर आ जाये।

‘मेरा राजस्थान’ परिवार का सभी ‘सुधार-जागिड़’ समाज बंधुओं से नप्रे निवेदन है कि आपसी रंजिश एवं मनमुटाव को भुला कर, मिलजुल कर समाज व देश के हित में कार्य करें, सुधार समाज का गौरवमय स्थान बरकरार रहे, यही श्री विश्वकर्मा प्रभु की सच्ची सेवा-पूजा होगी, साथ ही अपने वंश के नाम का सम्मान बढ़ायें और ‘भारत को ‘भारत’ ही बोलें INDIA नहीं। जय भारत!

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १७

नीम लगाओ  पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’



यहले मातृभाषा



फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

जरुर देखें मार्गदर्शन करें
www.mainbharathun.co.in

शिल्प ही जीवन का आधार शिल्प बिना सूना संसार

शिल्प और शिल्पियों का मानव जीवन में बहुत महत्व है, एक किसान से लेकर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, मैकेनिकल, ऋषिमुनि व साधु सन्तों के जीवन में भी शिल्पियों का आधार है, संसार का कोई भी निर्माण कार्य का आधार शिल्प ही है, इस संसार में मील, कारखाना, उद्योग, कम्प्यूटर, मशीन, अस्थ-शस्त्र आदि सभी निर्माण में विश्वकर्मा वंशियों की ही देन है।

विश्वकर्मा जी कला, विज्ञान एवं शिल्प की दृष्टि से अग्रणीय थे, उपलब्ध साहित्य में उनके विज्ञान एवं शिल्प चारुर्य को देखकर सब चकित हो जाते हैं, उस समय की कला व विज्ञान, अत्यधिक उन्नत अवस्था को प्राप्त थी। विश्वकर्मा ने देवों के लिये अनेक साधन बनाये, विभिन्न कलात्मक कार्य किये। महात्मा हिमाचल की प्रार्थना पर पार्वती विवाह के लिए विस्तृत मण्डप व यज्ञीय वेदी बनाई जो अनेक आश्चर्यों से युक्त थी। कुबेर के लिये अल्कापुरी, शिव लोक, ब्रह्म लोक का निर्माण किया। श्रीपुर

शिव की बनी रहे आप पर छाया, पलट दे जो आपकी किस्मत की काया मिले आपको गो सब अपनी क्लिन्डगी में, जो कभी किसी ने भी न पाया...



आपले नम्र स्नेहांकित

श्री अजित पाटील

अध्यक्ष

प्रमणांखनि : ९९२२४३९२५१

श्री अरुण चौगुले

सचिव

प्रमणांखनि : ९८५०६४६३७०

कार्यकरिणी सदस्य

श्री सुदीन खोत

प्रमणांखनि : ९८२२०१७८३२

श्री शांतीनाथ पाटील

प्रमणांखनि : ९९२२१०२३५८

श्री वर्धमान पांडे

प्रमणांखनि : ९९६०८१००७७

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

श्री विंद्र जैन (पाटील)

प्रमणांखनि : ९८२२०१८१७६

प्रमणांखनि : ९०११०२२५८५

श्री उमेश पाटील

प्रमणांखनि : ८१४९०५९१४४

प्रमणांखनि : ८८८८२७६२१

श्री अशोक नांदपांकर

प्रमणांखनि : ९०११०२२५८५

प्रमणांखनि : ८८८८२७६२१

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

नामक कई योजन का विचित्र नगर बनाया, स्फटिक मणि का उमापति शंकर-निवास, महाराजा इन्द्रधुन्य की यथशाला, अमरावती तथा द्वारकापुरी, लंकापुरी, गरुड़ भवन आदि अनेक भवन एवं विचित्र पुरी विश्वकर्मा ने ही बनाये हैं।

स्कन्द पुराण के नागर खण्ड के अनुसार विश्वकर्मा ने विभिन्न अस्त्र-शस्त्र निर्माण किये। ब्रह्मा को कण्डिका, विष्णु को चक्र, शिव को त्रिशूल, इन्द्र को बज्र, अग्नि को पाश तथा धर्मराज को दण्ड बनाकर दिये। ब्रह्मा पुराण तारक महात्म के अध्याय २९ के अनुसार सब देवताओं को विश्वकर्मा ने आयुध प्रदान किये, जिससे देवताओं ने युद्ध में शत्रुओं का विनाश किया।

संस्कृत में 'वि' का अर्थ पक्षी तथा 'मान' का अर्थ अनुरूप है, अतः विमान का अर्थ पक्षी के समान, इसी प्रकार हंस को समझना चाहिये।

आजकल विमान चिड़िया के रूप में होते हैं। विश्वकर्मा ने कई प्रकार के अद्भुत विमान निर्माण किये, जैसे विष्णु का वाहन 'गरुड़' है परन्तु यह कोई पक्षी नहीं था वरन् श्येन की आकृति का विशिष्ट प्रकार का विमान था, इसके अतिरिक्त मयूर, पुष्पक, शातकुम्भ, कामग, वैहायस एवं सोमयान इत्यादि असंख्य विमानों का निर्माण किया।



भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution



Sanjay Kochar

Surendra Oil Mill

P.O. Sainthia, Dist. : Birbhum, West Bengal, Bharat - 731234

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान

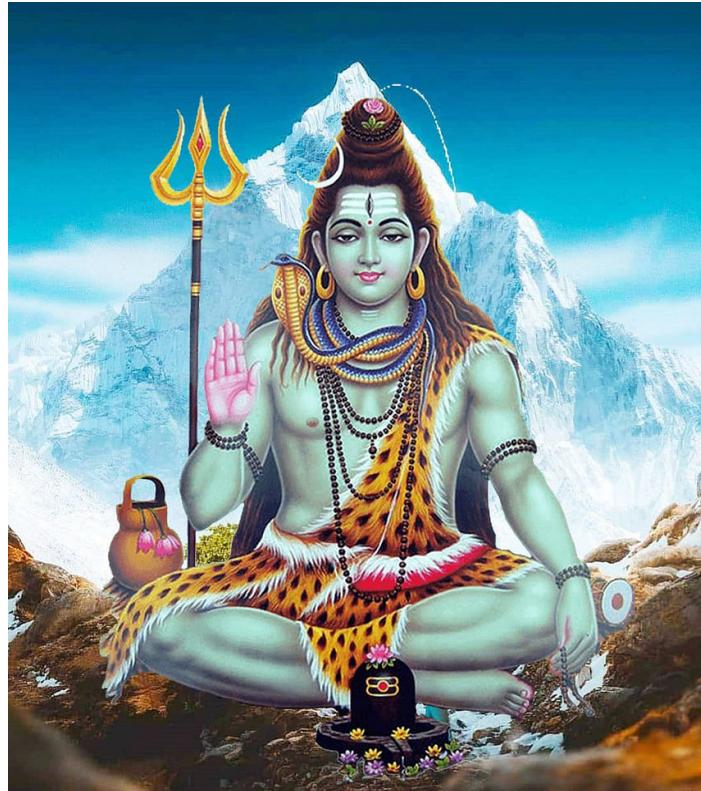
Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १८

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत' को 'भारत' ही बोला जाए'



हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार भगवान शिव का प्रमुख पर्व फाल्युन कृष्ण चतुर्दशी को ‘शिवरात्रि’ पर्व मनाया जाता है, माना जाता है कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्यरात्रि को भगवान् शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्मांड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं, इसीलिए इसे ‘महाशिवरात्रि’ अथवा कालरात्रि कहा गया है, तीनों भुवनों की अपार सुंदरी तथा शीलवती गौरी को अधीर्णी बनाने वाले शिव प्रेतों व पिशाचों से घिरे रहते हैं, उनका रूप बड़ा अजीब होता है, शरीर पर मसानों की भस्म, गले में सर्पों का हार, कंठ में विष, जटाओं में जगत-तारिणी पावन गंगा तथा माथे में प्रलयंकर ज्वाला, बैल को वाहन के रूप में स्वीकार करने वाले शिव अमंगल रूप होने पर भी भक्तों का मंगल करते हैं और श्री-संपत्ति प्रदान करते हैं।

विधान

इस दिन शिवभक्त शिवमंदिरों में जाकर शिवलिंग पर बेल-पत्र आदि चढ़ाते हैं, पूजन व उपवास करते हुए रात्रि को जागरण करते हैं। शिवलिंग पर बेल-पत्र चढ़ाना, उपवास तथा रात्रि जागरण करना एक विशेष कर्म की ओर इशारा करता है, इस दिन शिव जी की शादी हुई थी इसलिए रात्रि में शिवजी की बारात निकाली जाती है। वास्तव में शिवरात्रि का परम पर्व स्वयं परमपिता परमात्मा ही ज्ञानसागर है जो मानव मात्र को सत्यज्ञान द्वारा अन्यकार से प्रकाश की ओर अथवा असत्य से सत्य की ओर ले जाते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, स्त्री-पुरुष, बालक, युवा और वृद्ध सभी इस ब्रत को कर सकते हैं, इस ब्रत के विधान में सर्वे स्नानादि से निवृत होकर उपवास रखा जाता है, इस दिन मिट्ठी के बर्तन में पानी भरकर, ऊपर से बेलपत्र, आक धतुरे के पुष्प, चावल आदि डालकर ‘शिवलिंग’ पर चढ़ाया जाता है, अगर पास में शिवालय न हो तो शुद्ध गीली मिट्ठी से ही शिवलिंग बनाकर उसे पूजने का विधान है।

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, ‘हिन्दी’ भाषा के इस उत्थान में आँडे आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● १३

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

पर्व हर हर महादेव

रात्रि को जागरण करके शिवपुराण का पाठ सुनना हरेक ब्रती का धर्म माना गया है, अगले दिन सर्वे जौ, तिल, खीर और बेलपत्र का हवन करके ब्रत समाप्त किया जाता है, महाशिवरात्रि भगवान शंकर का सबसे पवित्र दिन है, यह अपनी आत्मा को पुनीत करने का महाब्रत है, इसके करने से सब पापों का नाश हो जाता है। हिंसक प्रवृत्ति बदल जाती है, निरीह जीवों के प्रति दया भाव उपज जाता है, ईशान संहिता में इसकी महत्ता का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

शिवरात्रि ब्रतं नाम सर्वपापं प्रणाशनम्

आचारण्डाल मनुष्याणं भुक्ति मुक्ति प्रदायकं

चतुर्दशी तिथि के स्वामी शिव हैं, अतः ज्योतिष शास्त्रों में इसे परम शुभफलदायी कहा गया है, वैसे तो शिवरात्रि हर महीने में आती है, परंतु फाल्युन कृष्ण चतुर्दशी को ही महाशिवरात्रि कहा गया है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार सूर्य देव भी इस समय तक उत्तरायण में आ चुके होते हैं तथा ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यन्त शुभ कहा गया है, शिव का अर्थ है कल्याण, शिव सबका कल्याण करने वाले हैं, अतः महाशिवरात्रि पर सरल उपाय करने से ही इच्छित शोष पृष्ठ २० पर...

‘बिजयनगर’ के इतिहास प्रकाशन पर
‘मैं भारत हूँ’ परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं



Pradip Khemka

Mob: 88228 00043

Kamal Khemka

Mob: 94351 15601

BALAJI AUTOMOBILES

Dealers in: Motor Spare Parts Wholesale &
Retail Dealers

7, Supurba Market, A.T. Road, Rly. Gate No. 4,
Guwahati, Assam - 781001

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत’ को ‘भारत’ ही बोला जाए

बिहार शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थान द्वारा माँ सरस्वती पूजनोत्सव सम्पन्न

दिल्ली: दिनांक १४ फरवरी २०२४ को बालाजी बाबोसा मंदिर डीडीए पार्क पॉकेट १३ सेक्टर २४ रोहिणी में बिहार शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थान द्वारा नवम् माँ सरस्वती पूजनोत्सव का आयोजन किया गया। माँ सरस्वती विद्यादायिनी कहलाती है, मान्यता यह है कि बसंत पंचमी को देवी सरस्वती का जन्म हुआ, इसी दिन वह हाथों में पुस्तक, वीणा और माला लिए श्वेत कमल पर विराजमान होकर प्रकट हुई, बताते कि बसंत पंचमी से ही बसंत ऋतु की शुरुआत होती है।



सरस्वती पूजा में काफी संख्या में लोग सह परिवार पथरें थे। मुख्य अतिथि के रूप में सीए सुशील वर्मा, पूर्व निगम पार्षद देवेन्द्र सोलंकी, पूर्व भाजपा विधायक प्रत्याशी रविंद्र इंद्राज, निगम पार्षद जय भगवान मास्टर, समाजसेवी भूपेंद्र शर्मा, समाज सेविका श्रीमती प्रीता हरित, सेक्टर २३, २४, २५ के सभी आरडब्ल्यूए के प्रधान व कार्यकरिणी सदस्य इस पूजा में सम्मिलित हुए, सभी आगन्तुक अतिथियों का पूजा में समिति द्वारा मंच पर स्वागत किया गया। आयोजन में संस्थान द्वारा कई निशुल्क शिविर की व्यवस्था की गई, जैसे की नेत्र जांच, दंत चिकित्सा, फिजियोथेरेपी, विकलांगों के लिए छीलचेयर, अन्य

कई सेवा उपलब्ध कराई गई थी। कार्यक्रम के पश्चात भोजन का भी विशेष प्रबंध था।

सरस्वती पूजनोत्सव में बच्चों ने भी भाग लिया था और अपनी कला का प्रदर्शन किया। बच्चों द्वारा भगवान श्री गणेश जी की स्तुति, माँ सरस्वती की



बंदना, भगवान श्री राम अयोध्या स्वागत पर प्रस्तुति के साथ कई सांस्कृतिक कार्यक्रम व प्रदर्शन किए गए, कार्यक्रम के अंत में सभी बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए।

सरस्वती पूजन के अगले दिन देवी सरस्वती की प्रतिमा का विसर्जन पूरे भक्ति भाव व आराधना के साथ किया गया। संस्था के पदाधिकारीयों ने कहा कि यह ज्ञान आंचल की पूजा है, हमारा उद्देश्य यही है कि माँ सरस्वती की पूजा के साथ-साथ सामाजिक कार्य भी किया जाये, हमारे संस्था द्वारा कमजोर वर्ग को सहयोग रूप में शिक्षा, चिकित्सा, भोजन व अन्य सेवाएं प्रदान कराया जाए, इस विषय पर भी कार्य किया जा रहा है।

बिहार शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के सभी पदाधिकारियों ने 'मैं भारत को फाउंडेशन' के अभियान का समर्थन करते हुए कहा कि 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' इंडिया नहीं, हम सभी इस अभियान का समर्थन करते हैं और करते रहेंगे। जय भारत!

बंगाल में मारवाड़ी समाज का होगा महासम्मेलन

कोलकाता: महानगर कोलकाता में मारवाड़ी संस्कृति को प्रचारित- प्रसारित करने एवं सामाजिक ताने-बाने को सुनियोजित करने के लिए प्रतिबद्ध मारवाड़ी संस्कृति मंच ने बड़ी पहल की है, संस्था ने मारवाड़ी समाज की सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों से आगे आकर तेजी से बढ़ रही अपसंस्कृति, दिखावा, आडंबर, फिजूलखर्ची एवं युवाओं में बढ़ते व्यसन आदि पर नियंत्रण के लिए सामूहिक परिचर्चा का आह्वान किया। प. बंगाल के विधायक विवेक गुप्त को इस समिति का चेयरमैन बनाया गया है, यह जानकारी मारवाड़ी संस्कृति मंच के अध्यक्ष ललित बेरीवाला, चेयरमैन निरंजन कुमार अग्रवाल एवं संस्थापक अध्यक्ष ललित प्रहलादका ने संयुक्त बयान में बताया कि विवेक गुप्त की अगुवाई में ही सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि सामूहिक परिचर्चा में भाग लेंगे



विधायक विवेक गुप्त

एवं एक आदर्श सामाजिक आचार-संहिता निर्माण की रूपरेखा तैयार करेंगे। अग्रवंश के संस्थापक महाराजा अग्रसेन ने 'एक ईट और एक रुपया' की जो अवधारणा दी थी उसे फिर से लागू करने की जरूरत है ताकि आर्थिक रूप से कमजोर और अपने ही सगे-संबंधियों एवं मित्रों के समक्ष हीनभावना का शिकार हो रहे निम्न व मध्यम वर्गीय मारवाड़ी सम्मान के साथ बराबरी के स्तर तक पहुंच सकें। पश्चिम बंगाल में लाखों मारवाड़ी परिवार रहते हैं, इनमें उद्योगपति से लेकर नौकरी पेशा मारवाड़ी सभी हैं। वक्त की पुकार है कि इनमें सामाजिक नीति-नियमों के अनुपालन को लेकर एक समन्वय हो, आपसी तालमेल से समाज की छवि को बेहतर बनाने की सोच हो और ऐसे आदर्श स्थापित करने की प्रवणता हो जो अन्य समाजों को भी प्रभावित कर सके।

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २१

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

बिजयनगर आसाम में है चंदुबी झील



'चंदुबी झील' गुवाहाटी शहर से ६५ व बिजयनगर से लगभग ३६ किलोमीटर दूर गारो पर्वत की विशाल तलहटी के बीच स्थित है, इस झील का निर्माण १८९७ में असम में आए विनाशकारी भूकंप के परिणामस्वरूप हुआ था। चंदुबी धूमने लायक जगह है जहां कोई भी शांति मनन कर सकता है क्योंकि यह शहर और आधुनिक सभ्यता के शोर और प्रदूषण से मीलों दूर स्थित है। 'चंदुबी' में कुल दो हजार हेक्टेयर भूमि है और पूरा क्षेत्र खूबसूरत गांवों, विशिष्ट चाय बागानों और घने जंगलों से घिरा हुआ है। यह आगंतुकों को शांति का अनुभव और प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने के लिए सर्वोत्तम क्षण प्रदान करता है, इसका असली सार इसकी गोद में है। पिकनिक के लिए स्थान ढूँढ़ने के लिए झील को सर्वोत्तम विकल्प के रूप में सुझाया गया है और पिकनिक सीज़न के दौरान विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में पर्यटक आकर्षित होते हैं।

'चंदुबी झील' सर्दियों के मौसम में आवासीय पक्षियों के साथ-साथ कई प्रवासी पक्षियों को भी आकर्षित करती है। प्राकृतिक सुंदरता के आकर्षण के साथ-साथ 'चंदुबी झील' आसपास के गांवों की अनूठी और जीवंत संस्कृति के लिए भी प्रसिद्ध है। मछली पकड़ना और साइकिल चलाना झील की कुछ अन्य विशेषताएं हैं जिनका पर्यटक आनंद लेते हैं। झील की सभी अनूठी खूबियाँ

पर्यटकों के लिए धूमने के लिए आकर्षित करती हैं।

'चंदुबी झील' जंगल में कैप प्रदान करती है जहां आगंतुकों को कैपिंग का अनुभव करने और गहरे जंगलों में गुणवत्तापूर्ण समय बिताने का मौका देती है। जंगल कैप 'पलाशबाड़ी' की श्रृंखला में पाया जाता है। मिर्जा, गुवाहाटी से आसानी से पहुंचा जा सकता है और मुख्य गुवाहाटी हवाई अड्डे से लगभग ३७ किलोमीटर दूर है। जंगल कैप में नेटवर्क कवरेज के साथ एक शुद्ध प्राकृतिक वातावरण है, यहां कैपिंग, रोमांचक जंगल ब्रमण, नाव की सवारी और जातीय खाद्य पदार्थों के साथ एक रेस्तरां है, जंगल कैप में रहने के दौरान आगंतुकों को अक्सर मुफ्त नाश्ता परोसा जाता है।

चंदुबी जंगल कैप

जंगल कैप के साथ झील में एक इको रिसॉर्ट भी है, जहां पर्यटक जितने चाहें उतने दिनों तक रह सकते हैं और जगह की सुंदरता को देख सकते हैं। चामड़ुबी का रिज़ॉर्ट उनकी स्थानीय संस्कृति और अनूठी परंपराओं को बढ़ावा देता है, मुख्य रूप से राभा संस्कृति, उनके आदिवासी व्यंजनों जैसे कि चुम्गा, जो करी की किस्मों में से एक है और मसोर ओड तेंगा अंजा, चावल की बियर और मिश्रण से बनी मछली की करी है। सेब का एक प्रकार जिसे हाथी सेब



कहा जाता है। चामड़ुबी इको रिज़ॉर्ट में ८ टैंट और पेड़ों के विशालता है जो मेहमानों को आकर्षित करते हैं।

छ्य गाँव

'छ्य गाँव' भारत के असम के कामरूप जिले में एक शहर है। ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। यह प्रमुख शहर गुवाहाटी से ३८ व बिजयनगर से १४ किमी दूर है। यह शहर शक्ति पीठ 'मां चंडिका देवालय' के लिए जाना जाता है, जहां दुर्गापूजा के दौरान हजारों भक्त आते हैं देखने। चंपक नगर, छ्यगाँव में स्थित चंद सदागर का ऐतिहासिक 'मेर घर'।

छ्यगाँव नाम दो कामरूपी असमिया शब्दों सोया (छ्य) और गाँव (गाँव) से बना है जिसका अर्थ है 'छ्य गाँव'। अलग-अलग धर्मों के लोग यहां अलग-अलग कामरूपी संस्कृति के साथ रहते हैं, भक्त यहां 'चंडिका' के प्राचीन मंदिर में पूजा करने के लिए आते हैं। प्राचीन काल के व्यापारी चंद सदागर का 'मेर घर', उनकी बहू और बेटे, बेहुला और लखिंदर की कहानी का प्रमाण देता है, यह शहर प्राचीन कामरूप के कामापीठा डिवीजन का हिस्सा था, यह प्राचीन कामरूप साम्राज्य के राजधानी क्षेत्र के भीतर पूर्व-



आधुनिक काल में यह पूर्वी कामरूप क्षेत्र का हिस्सा बना रहा, उन्नीसवीं सदी में, यह नवगठित प्रशासनिक अधिभाजित कामरूप जिले का हिस्सा बन गया। २००३ में पुराने जिले के विभाजन के बाद, इसे कामरूप ग्रामीण जिले में शामिल किया गया।

आओ मिलकर हिंदी का सम्मान करें 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने की प्रतिज्ञा करें - बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी'

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २२

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

राजस्थान टूरिज्म को सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार



मुम्बई: राजस्थान की उप मुख्यमंत्री और पर्यटन मंत्री दिया कुमारी ने मुम्बई ओटीएम समापन और पुरस्कार समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि राजस्थान अपने महलों, विरासत स्थलों, इंफ्रास्ट्रक्चर व इको-टूरिज्म आदि

के लिए प्रसिद्ध है। ओटीएम में पर्यटन विभाग की भागीदारी ने राजस्थान में विदेशी पेशेवरों के लिए पर्यटन विकास के दबावे खोल दिए हैं। उप मुख्यमंत्री ने जियो वर्ल्ड कन्वेशन सेंटर में आयोजित समारोह में राजस्थान टूरिज्म को सर्वश्रेष्ठ डिजाइन और सजावट का पुरस्कार मिलने पर खुशी जताई। दिया जी ने कहा कि राजस्थान ने जी-२० बैठकों की मेजबानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदयपुर, जोधपुर और जयपुर में राज्य की पर्यटन क्षमता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए 'भारत' के एमआईसीई हब के रूप में राजस्थान की छवि को और बढ़ावा जाएगा, राज्य ने अपनी स्थिति में सुधार करते हुए घरेलू और विदेशी दोनों पर्यटकों के लिए उचां स्थान हासिल किया है। हालिया आंकड़ों के मुताबिक २०२३ में राज्य में आने वाले आगंतुकों की संख्या काफी रही। १७.९० करोड़ से अधिक घरेलू पर्यटकों की मेजबानी, साथ ही लगभग १७ लाख विदेशी आगंतुकों का आगमन, मेहमानों की विविध श्रृंखला को दर्शाता है, आयोजन में पूरे राजस्थान से पर्यटन प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

मैं भारत हूँ फाउंडेशन की दिल्ली कार्यालय का उद्घाटन भाजपा जिलाध्यक्ष सत्यनारायण गौतम के हाथों सम्पन्न



दिल्ली-रोहिणी: दिनांक ८ फरवरी २०२४ को 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' कार्यालय रोहिणी सेक्टर २४ का उद्घाटन उत्तरी पश्चिमी भाजपा जिला अध्यक्ष सत्यनारायण गौतम जी के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में निगम पार्षद जय भगवान जी, उपाध्यक्ष युवा मंच मुकुल शर्मा जी, पूर्व निगम पार्षद देवेंद्र सोलंकी जी, प्रधान सुशील वर्मा, श्रीमती कोमल सेठी व उनके साथी कार्यकारिणी सदस्य, अन्य समाजसेवी सदस्य कार्यक्रम में शामिल हुए, सभी ने 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' अभियान को अपना सहयोग देते हुए कहा कि 'भारत' हमारी परंपरा व संस्कृति से जुड़ा हुआ नाम है। 'भारत' का केवल एक नाम और एक ही पहचान रहनी चाहिए, सभी ने कहा हम सब 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' का निष्ठापूर्ण सहयोग करेंगे। जय भारत!

श्री विश्वकर्मा जयंती के पावन पर्व पर
 'मैं भारत हूँ परिवार' को हार्दिक शुभकामनायें



Mangilal D. Jangid

जिलाध्यक्ष अ.भा. जांगिल ब्राह्मण महासभा
 Mob: 9822547178 / 9422188513

1/19/111 Shahnagar, Near Raj Mall, Nanded,
 Maharashtra, Bharat - 431602

'बिजयनगर' के
 इतिहास प्रकाशन पर
 'मैं भारत हूँ' परिवार को
 हार्दिक शुभकामनाएं



Sushila Devi Jhanjhari

अध्यक्ष दिगम्बर जैन महिला समाज बिजयनगर

Kistur Chand, Prakash Chand, Sanjay Kumar Jhanjhari

Mob: 8753945515

Near Jain Temple Post, Bijaynagar, Kamrup,
 Assam, Bharat - 781122

हिंदी में मानवता है इसलिए हिंदी सर्वमान्य है-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २३

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

संजय खेतान का तिनसुकिया आसू के उपाध्यक्ष पद से तिनसुकिया लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल तक का सकर



तिनसुकिया: तिनसुकिया आसू के पूर्व उपाध्यक्ष, तिनसुकिया लॉ कॉलेज छात्र एकता सभा के पूर्व महासचिव संजय खेतान ने ३ जुलाई को तिनसुकिया विधि महाविद्यालय के प्रिंसिपल का पदभार ग्रहण किया है। श्री खेतान इससे पहले ३ जुलाई २०२३ तक तिनसुकिया लॉ कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल के रूप में कार्यरत थे।

मालूम हो कि तिनसुकिया के जाने माने शिक्षाविद स्वर्गीय पुरुषोत्तम खेतान के सुपुत्र संजय खेतान, जिस तिनसुकिया लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल बने हैं, उसी कॉलेज में पढ़ते हुए उन्होंने अपनी एलएलबी की पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और डिग्रॉड विश्वविद्यालय से एलएलबी की परीक्षा में तीनों वर्ष विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान हासिल कर एक रिकॉर्ड कायम किया, तत्पश्चात तिनसुकिया लॉ कॉलेज में अध्यापन करते हुए उन्होंने एलएलएम की डिग्री भी प्रथम श्रेणी में प्राप्त की, इसके पहले बी कॉम की परीक्षा में उन्होंने डिग्रॉड विश्वविद्यालय से डिस्ट्रिंक्शन सहित डिग्री हासिल की थी।

संजय खेतान के अनुसार अब तक की यात्रा का प्रत्येक चरण सीखने, समर्पण और इस संस्थान के प्रति गहन प्रेम से भरा रहा। उल्लेखनीय है कि अपने पूरे कार्यकाल के दौरान श्री खेतान तिनसुकिया लॉ कॉलेज सोसाइटी गवर्निंग बॉडी के सचिव के पद को अलंकृत करते हुए लॉ कॉलेज के विकास और प्रगति में अथक योगदान दिया है।

उनके कार्यकाल में तिनसुकिया लॉ कॉलेज में एक उल्लेखनीय परिवर्तन भी देखा गया। कॉलेज एक असम प्रकार की इमारत से एक आधुनिक बहुमंजिला संरचना में विकसित हुआ, जो कॉलेज के स्वयं की पूँजी के माध्यम से हासिल की गई, जो कि असाधारण उपलब्धियों का प्रमाण है, इन तमाम उपलब्धियों में श्री खेतान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन उपलब्धियों के बारे में पूछे जाने पर श्री खेतान का कहना है कि मैं इस प्रतिष्ठित संस्थान के प्रिंसिपल के रूप में नेतृत्व करने के लिए बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूँ और मैं उन सभी के प्रति बहुत कृतग्र भी हूँ जिन्होंने इस यात्रा में मेरा समर्थन किया, साथ ही मैं प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अपनी हार्दिक सराहना व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने हमारे सामूहिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

संजय खेतान बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। वे एक जाने-माने पत्रकार, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के संवाददाता, खेल संगठक, समाजसेवी होने के अलावा विभिन्न समाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

शिक्षा के विस्तार में विश्वास रखने वाले श्री खेतान तिनसुकिया एजुकेशन ट्रस्ट एवं बी के सारस्वत एजुकेशन ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी हैं, साथ ही श्री खेतान एन्यू हाई स्कूल तथा बस पब्लिक स्कूल के सचिव के रूप में भी पिछले २८ वर्षों से अपनी सेवाएं दे रहे हैं, इस दौरान इन दोनों विद्यालयों उनके नेतृत्व में हर क्षेत्र में अपना परचम लहराया है, इसके अलावा भी वे तिनसुकिया कॉर्मस कॉलेज संचालन समिति के अध्यक्ष के तौर पर लगातार ६ वर्षों तक अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दे चुके हैं, शिक्षा के प्रसार के क्षेत्र में, भविष्य की योजनाओं के बारे में श्री खेतान का कहना है कि तिनसुकिया एजुकेशन ट्रस्ट के बैनर तले डी फार्मा कॉलेज, नर्सिंग कॉलेज एवं बी एड कॉलेज की स्थापना भी की जाएंगी जिसकी तैयारियां जोरों पर चल रही हैं।

श्री खेतान एक वरिष्ठ पत्रकार भी हैं-

श्री खेतान तिनसुकिया प्रेस क्लब के संस्थापक सदस्य एवं मुख्य सलाहकार हैं, इससे पहले वे एक पत्रकार के रूप में विभिन्न अखबारों भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं। असम के इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया के यौवन काल में पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उन्होंने कई नए प्रयोग किए थे। ९० के दशक में वरिष्ठ पत्रकार क्रमशः रविशंकर रवि (दैनिक पूर्वोदय के मुख्य संपादक), अमूल्य खाटनियार एवं संदीप मिश्रा के साथ उन्होंने तिनसुकिया में 'तिनसुकिया आई' नामक एक न्यूज चैनल की शुरुआत की थी। माना जाता है वो असम का पहला न्यूज चैनल था। २००३ में तिनसुकिया के हमंत गोहाई द्वारा खोले गए ईएससी न्यूज में कृष्णा उपाध्याय एवं रंजीत दत की जोड़ी के साथ उनके द्वारा बनाया गया कार्तिमान को आज भी लोग याद करते हैं।

एक दक्ष खेल संगठक के रूप में भी उन्होंने असम मोटर स्पोर्ट्स क्लब की स्थापना कर राष्ट्रीय स्तर की कार रैलियों का आयोजन करवाया, जिसमें केंद्रीय मंत्री किरण रिजिड एवं विष्वात हास्य कलाकार असरानी उद्घाटन एवं पुरोषकार वितरण समारोह में शिरकत कर चुके हैं। श्री खेतान ने निशानेबाजी को प्रोत्साहित करने हेतु अपने पिता की स्मृति में एक शूटिंग रेंज का निर्माण भी करवाया, जहां से प्रशिक्षण लेकर कई युवा राज्य एवं में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग ले चुके हैं।

श्री खेतान तिनसुकिया जिला रायफल एवं शूटिंग एसोसिएशन के मानद सचिव भी हैं। श्री खेतान ने अपनी माता की स्मृति में शारदा खेतान स्मृति न्यास की स्थापना की, जो कि पिछले २० वर्षों से लगातार तिनसुकिया जिले में आयोजित होने वाली दुर्गापूजा को लेकर प्रतियोगिता आयोजित कर उन्हें 'शारदा ट्रॉफी' प्रदान करता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री खेतान द्वारा पिछले वर्ष तिनसुकिया जिला दिवस के अवसर पर उनके द्वारा निर्देशित एवं निर्मित 'तिनसुकिया गीत' ने पूरे असम में वाहवाही लूटी।

असम में सभी समाज के लोगों के बीच असमिया संस्कृति के प्रचार प्रसार व आत्मसात करने की अवधारणा को बल देने हेतु इस वर्ष गठित 'तिनसुकिया सांस्कृतिक एकता मंच' का गठन करने में भी उन्होंने शोष पृष्ठ २५ पर...

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है- बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २४

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

श्री भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन (धर्म संरक्षणी, तीर्थ संरक्षणी, श्रुत संवर्धनी, महिला, युवा) महासभा की आम सभा की बैठक सम्पन्न



कोलकाता: श्री भारतवर्षीय दिग्म्बर जैन महासभा की आमसभा की बैठक, २९/१ बी रामकृष्ण समाधि रोड (फूलबाग पुलिस स्टेशन के पास) काकुरगाढ़ी, कोलकाता-७०००५४ में महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष गजराज गंगवाल जैन की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। सर्वप्रथम मंगलाचरण अनुग्रेशा (महिला मण्डल) द्वारा किया गया। स्वागत गीत पारस मण्डल की महिलाओं द्वारा तथा चित्र अनावरण भागचन्द्र पहाड़िया, कैलाशचंद बड़जात्या, पवन कुमार मोदी एवं दीपक सेठी द्वारा किया गया। दीप प्रज्ज्वलन राष्ट्रीय अध्यक्ष गजराज गंगवाल जैन एवं उपस्थित पदाधिकारियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ, राष्ट्रीय अध्यक्ष गजराज जी का अभिनन्दन पश्चिम बंगाल महासभा द्वारा मोमेन्टो प्रदान कर साफा पहनाकर किया गया तथा तीर्थ संरक्षणी महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री राजकुमार सेठी जैन, कोलकाता को ‘अक्षुण्ण जिन धर्म प्रभावना के संवाहक’ की उपाधि से विभूषित कर सम्मान किया, इसी तारतम्य में संजय दीगान कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षणी महासभा सूरत, प्रकाशचंद बड़जात्या जैन, महामंत्री महासभा चेन्नई, पवन गोधा कोषाध्यक्ष महासभा दिल्ली, तेज कुमार वेद उपाध्यक्ष महासभा इन्दौर, अशोक कुमार चूड़ीवाल उपाध्यक्ष तीर्थ संरक्षणी महासभा बरपेटा, महिपाल पहाड़िया उपाध्यक्ष महासभा जालन्धर, संदीप जैन महामंत्री युवा महासभा आदि का अभिनन्दन कर ‘जिन धर्म संस्कृति संरक्षक’

पृष्ठ २४ से... मुख्य भूमिका निभाई थी, जिसके बैनर तले इस बार बोहगी बिहू का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में सभी समाज के लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हुए एक मिसाल कायम की, जिसकी प्रशंसा असम के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया व असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने भी की।

श्री खेतान की इन सेवाओं के चलते समय-समय पर कई संस्थाओं व संगठनों द्वारा उनको पुरस्कृत भी किया जा चुका है। हाल ही में दिल्ली में आयोजित एक समारोह में उनको इन्हीं सेवाओं के चलते विश्व मानवाधिकार सुरक्षा आयोग द्वारा मानद डॉक्टरेट की डिग्री से भी नवाजा गया है, ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति के तिनसुकिया लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल बनने से लोगों को आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह कॉलेज राष्ट्रीय स्तर पर जल्द ही अपना परचम लहराएगा।

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि ‘हिन्दी’ राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं ‘हिन्दी’ को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्दास

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान
Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २५

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’



श्री विश्वकर्मा जयंती के
पावन पर्व पर
‘मैं भारत हूँ परिवार’ को
हार्दिक शुभकामनाये

जयपाल शर्मा (जांगिड़)

संगठन मंत्री अ. भा. जांगिड़ ब्राह्मण महासभा

Mob: 9250925891

११३, राजेन्द्र पार्क एक्टोंशन, नंगलोई, दिल्ली, भारत - ११००४९



पहले मातृभाषा



फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

जरूर देखें मार्गदर्शन करें
www.mainbharathun.co.in

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि मैं भारत हूँ



प्रदीप खेमका
व्यवसायी व समाजसेवी
बिजयनगर असम निवासी
भ्रमणध्वनि: ৮৮২২৮০০০৪৩

प्रदीप जी अपनी कर्मभूमि 'बिजयनगर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'बिजयनगर' की स्थापना १९५८ में हुई, एक नया शहर बनना प्रारंभ हुआ, उसके पहले यहाँ के लोग 'पलाशबाड़ी' में बसे हुए थे, जहाँ ब्रह्मपुत्र नदी के कटाव के कारण कुछ हिस्सा बह गया, तो वहाँ के लोग 'बिजयनगर' में आकर बस गए और जमीन खरीद कर अपने मकान बनाने लगे, धीरे-धीरे यहाँ बस्तियां बसने लगी। पहले और आज के 'बिजयनगर' में रात दिन का अंतर आ गया है, यहाँ की आर्थिक स्थिति मुख्यतः कृषि क्षेत्र पर आधारित है। सुपारी की बहुत बड़ी पैदावार यहाँ आसपास के गांव में होती है। सुपारी का बहुत बड़ा कारोबार 'बिजयनगर' में होता है, इसके बाद धान की भी पैदावार होती है। व्यवसाय एवं वाणिज्य के क्षेत्र में आज 'बिजयनगर' एक उत्तम स्थान है, यहाँ पिछले चार-पांच सालों से इंडस्ट्रीज भी लग रही है। यहाँ का सामाजिक बातावरण बहुत ही उत्तम है, हर धर्म समाज के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, यहाँ राजस्थानियों के लगभग २५० परिवार हैं, सभी अपनी कला संस्कृति और रीत-रिवाज से जुड़े हैं, यहाँ हर पर्व बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है, यहाँ अग्रवाल समाज द्वारा विष्णु मंदिर और विवाह भवन बनाया गया है, शिक्षा व स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से भी यह क्षेत्र पहले की अपेक्षा अधिक उत्तम हो गया है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'बिजयनगर' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है और यह होना भी चाहिए क्योंकि राजा 'भरत' के नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा और हर भाषा में अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए।

प्रदीप जी के पूर्वज राजस्थान स्थित 'नोहर भादरा' के निवासी थे। आपका जन्म १९६४ को भी 'बिजयनगर' में ही हुआ। यहाँ आप मोटर पाट्स के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, 'अग्रवाल पंचायत' में सलाहकार की भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

कमल खेमका जी अपनी कर्मभूमि बिजयनगर की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि बिजयनगर के पहले कुछ किलोमीटर दूरी पर 'पलाशबाड़ी' हुआ करती थी जो १९६२-६३ में नदी कटाव के कारण पूरी तरह बह गया, वहाँ की बस्तियां कुछ गुवाहाटी कुछ अन्य स्थानों पर जाकर बस गए और कुछ लोग 'बिजयनगर' आकर बस गए। यहाँ सरकार से जमीन खरीदी गई और प्लाटिंग के माध्यम से सभी को जमीन बांटी गई। धीरे-धीरे लोगों ने यहाँ बसना प्रारंभ किया। आज जैन समाज व अग्रवाल समाज द्वारा जैन मंदिर और विष्णु मंदिर का निर्माण किया गया है, समाज द्वारा विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी लोग बड़े ही उत्साह से सम्मिलित होते हैं। वर्तमान में यहाँ अग्रवाल समाज के लगभग ६० परिवार निवास करते हैं। यहाँ समाज द्वारा कई उद्योग व्यापार प्रारंभ किया गया है यहाँ पिछले १० सालों में इंडस्ट्रीज भी लग गई है। यहाँ सुपारी और धान की पैदावार सबसे अधिक होती है। यहाँ असमिया समाज के भी कई मंदिर और नाम घर बने हुए हैं। यहाँ विष्णु मंदिर का निर्माण १९६४ में किया गया था, जिसमें श्री राम और बालाजी के दर्शन होते हैं, ऐसी कई विशेषताएं हैं हमारे 'बिजयनगर' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो।

कमल जी मूलतः हरियाणा स्थित सिरसा के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा बिजयनगर में संपन्न हुयी है। यहाँ आप मोटर पाट्स के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अग्रवाल पंचायत बिजयनगर असम के महामंत्री पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

कमल खेमका

महामंत्री अग्रवाल पंचायत बिजयनगर
सिरसा निवासी-बिजयनगर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३५११५६०९



हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २६

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि मैं भारत हूँ

कमल जी अपनी कर्मभूमि 'बिजयनगर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'बिजयनगर' में बहुत परिवर्तन आ गया है। 'बिजयनगर' में राजस्थान और हरियाणा के अग्रवाल और जैन समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, लोग एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही सौहार्दपूर्ण और मिलनसार है, शायद ही ऐसा माहौल अन्यत्र कहाँ देखने को मिलेगा। 'बिजयनगर' में भव्य पार्श्वनाथ जी का मंदिर बनाया गया है, जो नौर्थ इस्ट का सबसे बड़ा जैन मंदिर है, यहां के अग्रवाल परिवार द्वारा भी विष्णु मंदिर बनाया गया है। यहां हर पर्व बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है, सभी एक दूसरे के धार्मिक और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। व्यापार की बात की जाए तो यहां सुपारी का कारोबार बहुत बड़े पैमाने पर होता है, इसके अलावा अन्य छोटे-बड़े उद्योग भी लगे हैं। 'बिजयनगर' के आसपास कई दर्शनीय स्थल हैं, जहां लोग घूमने जाना पसंद करते हैं। 'गुवाहाटी' यहां से मात्र कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहां कई पर्यटन स्थल हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे बिजयनगर में... 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हर भाषा में हमारे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। प्राचीन काल से हमारे देश का नाम 'भारत' ही था और 'भारत' ही रहना चाहिए।

कमल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सीकर' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'सीकर' में और उच्च शिक्षा 'बिजयनगर' में संपन्न हुई है। यहां आप पेट्रोलियम के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में दिग्म्बर जैन समाज के सहस्रचिव और उपाध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में बिजयनगर विकास समिति के उपाध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं तथा अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!



मनोहर (पंज) बुधिया
उपाध्यक्ष अग्रवाल सभा बिजयनगर
फतेहपुर शेखावाटी निवासी-बिजयनगर असम प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ৯৪৩৫১০৭২৮৫

जैन समाज की सबसे अधिक संख्या है। अग्रवाल समाज द्वारा १९६५ में विष्णु मंदिर स्थापित किया गया, साथ अग्रवाल समाज द्वारा अग्रवाल विवाह भवन का भी निर्माण किया गया। विष्णु मंदिर का निर्माण गणपतरायजी बजाज, जगदीशजी चौधरी, पुजारी लक्ष्मी नारायणजी, बुधरामजी, भक्तरामजी, महावीरजी अग्रवाल, शिव भगवानजी, चिंरजीव लालजी, चीमनलालजी, गीगराजजी, वर्तमान अध्यक्ष जुगल किशोरजी व अन्य बड़े बुजुर्गों ने मिलकर कराया। ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा होने के कारण 'बिजयनगर' की सुंदरता और भी बढ़ जाती है। यहां चावल, सुपारी और कई छोटे-छोटे इंडस्ट्रीज का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है, सभी पर्व हर समाज मिलजुल कर मनाते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं 'बिजयनगर' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

मनोहर जी मूलतः राजस्थान स्थित 'फतेहपुर' शेखावाटी के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से असम के कामरूप जिले में स्थित 'पलासबाड़ी' में बसा हुआ था, आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'बिजयनगर' में संपन्न हुई है, यहां आप गड़ियों व मोटर पार्ट्स के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, 'बिजयनगर' अग्रवाल पंचायत के उपाध्यक्ष व श्याम दिवाने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं, बिजयनगर विकास समिति व श्याम मित्र मंडल से भी जुड़े हैं। जय भारत!

मनोहर जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बिजयनगर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि यह असम का प्रमुख शहर बन गया है, पहले यहां के निवासी यहां से कुछ किलोमीटर दूरी पर स्थित 'पलासबाड़ी' में रहते थे, पर नदी कटाव होने पर पूरा 'पलासबाड़ी' पानी में बह गया तो वहां के निवासी कुछ गुवाहाटी चले गए तो कुछ बिजयनगर आकर बस गए। यहां उनको नियमानुसार रहने की व्यवस्था की गई। यहां राजस्थानी मारवाड़ी समाज में अग्रवाल और

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिंदी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २७

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'



अजीत बगड़ा
व्यवसायी व समाजसेवी
लाडनुं निवासी-बिजयनगर प्रवासी
भ्रमणधनि: ७८९६२३१८४१

जैन समाज में १०५ गणिनी आर्थिका सुपार्श्वर्मति माताजी के द्वारा दो पंचकल्याणक हुए हैं, तब से यहां के लोगों का धर्म के प्रति रुद्धान बढ़ गया है, यहां समय-समय पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। व्यवसायिक स्थिति की बात की जाए तो ‘बिजयनगर’ विशेषकर सुपारी व्यापार के लिए जाना जाता है, इसके अलावा धान की भी पैदावार यहां बड़े पैमाने पर होती है, जिसका निर्यात किया जाता है शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी यहां दिन प्रतिदिन प्रगति हो रही है, यहां लगभग ढाई सौ परिवार राजस्थानियों के हैं, जिनकी अपनी एक अलग कॉलोनी बनी हुई है, यहां अग्रवाल और जैन समाज की संख्या अधिक है। अग्रवाल समाज द्वारा यहां एक विष्णु मंदिर तो जैन समाज द्वारा यहां दो भव्य जैन मंदिर बनाए गए हैं, हर धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम राजस्थानी समाज द्वारा मिलकर किया जाता है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे ‘बिजयनगर’ में... ‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

अजीत जी मूलतः राजस्थान स्थित ‘लाडनुं’ के निवासी हैं, आपका परिवार कई पीढ़ियों से असम के ‘पलासबाड़ी’ में बसा हुआ था, आप १९५८ में ब्रह्मपुत्र नदी कटाव के बाद से बिजयनगर में बसे हुए हैं और विभिन्न कारोबार में संलग्न हैं, कई सामाजिक संस्थानों से भी जुड़े हैं तथा आसाम साहित्य सभा के आजीवन सदस्य हैं। जय भारत!

बबीता जी अपनी कर्मभूमि ‘बिजयनगर’ की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पिछले २०-२५ सालों में ‘बिजयनगर’ में बहुत परिवर्तन आया है, दिन प्रतिदिन यहां का विकास हुआ है। ‘बिजयनगर’ में अग्रवाल और जैन समाज के परिवार बसे हुए हैं, सभी के बीच परस्पर मेल मिलाप बहुत ही उत्तम है, पहले यहां सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रम कम होते थे पर अब हर पर्व, हर कार्यक्रम बड़े ही उत्साह से समाज द्वारा मिलजुल कर मनाया जाता है। यहां अग्रवाल समाज द्वारा विष्णु मंदिर स्थापित किया गया है, जहां विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम होते रहते हैं। महिलाओं की भी इसमें भागीदारी बढ़-चढ़कर रहती है, व्यवसाय की बात की जाए तो ‘बिजयनगर’ में ग्रोसरी और सुपारी का बहुत बड़ा कारोबार होता है, जिसकी खरीदी, बिक्री बड़े पैमाने पर होती है। यहां राजस्थानी समाज के अधिकतर परिवार कारोबार से ही जुड़े हुए हैं। प्राकृतिक दृष्टिकोण से बहुत ही सुंदर स्थान है ‘बिजयनगर’। यहां से गुवाहाटी मात्र १ घंटे की दूरी पर स्थित है, जहां पर कई दर्शनीय स्थल हैं, सभी वहीं धूमने के लिए जाते हैं। ‘बिजयनगर’ के आसपास भी कई अन्य स्थान हैं धूमने के लिए, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे ‘बिजयनगर’ में... ‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करती हूँ।

बबीता जी मूलतः राजस्थान की निवासी हैं। आपका ससुराल पक्ष ‘भिवानी’ हरियाणा का निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा असम के रंगपाड़ा में संपन्न हुई है। आप पिछले २०-२५ सालों से ‘बिजयनगर’ में बसी हुई हैं, वर्तमान में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन बिजयनगर शाखा की सचिव हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी रहती है। जय भारत!



प्रदीप पहाड़िया
व्यवसायी व समाजसेवी
बानुड़ा (खुड़ा) निवासी-बिजयनगर प्रवासी
भ्रमणधनि: ९४३५१४१५६५

प्रदीप जी अपनी जन्मभूमि ‘बिजयनगर’ की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि बिजयनगर से ३ किलोमीटर दूरी पर स्थित है ‘पलासबाड़ी’ जिसका कुछ हिस्सा ब्रह्मपुत्र नदी कटाव के कारण बह गया था और वहां के लोग ‘बिजयनगर’ आकर बस गए। यहां जमीन खरीदी, मकान और मंदिर बनाए। यहां जैन समाज द्वारा एक भव्य दिग्म्बर जैन पार्श्वनाथ मंदिर तथा हाल ही में युवकों द्वारा वासुपुज्य जिनालय का निर्माण हुआ है। अग्रवाल समाज द्वारा एक विष्णु मंदिर बनाया गया है, जिसमें कई देवी देवताओं शेष पृष्ठ २९ पर...

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी ‘जय भारत’ से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान
Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २८

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’

पृष्ठ २८ से ... के मूर्तियां स्थापित हैं। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, यहां जैन समाज के लगभग १८० परिवार हैं, इसके अलावा अग्रवाल, ब्राह्मण व अन्य समाज के लोग भी बसे हैं, सभी के बीच परस्पर मेल मिलाप बहुत ही उत्तम है, हर पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। लोग एक दूसरे के सहयोग के लिए आगे रहते हैं। विजयनगर की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां सुपारी का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है, इसके अलावा विजयनगर के आसपास भी कई पर्यटन स्थल हैं, ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा यह एक सुंदर शहर है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'बिजयनगर' की...

प्रदीप जी मूलतः राजस्थान के 'सीकर' जिले में स्थित बानुड़ा गांव के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'बिजयनगर' में संपन्न हुई है। आपका परिवार लगभग १०० वर्षों से असम में बसा हुआ है। यहां आप कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं साथ ही दिगम्बर जैन समाज में भी सदस्य के रूप में सक्रिय हैं। जय भारत!

विमल जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'बिजयनगर' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'बिजयनगर' १९५८ के बाद नया शहर बसा। पहले और आज के 'बिजयनगर' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है, पहले यहां कुछ भी नहीं था, यहां के लोग पहले 'पलासबाड़ी' नामक स्थान पर रहते थे, जहां नदी कटाव के कारण लोग 'बिजयनगर' में आकर बसने लगे, यहां जमीन खरीदी की। यहां मारवाड़ी समाज की संख्या सबसे अधिक है, इनमें अग्रवाल, जैन और हरियाणा के लोग हैं। 'बिजयनगर' की सामाजिक स्थिति बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग एक दूसरे से मिलजुल कर रहते हैं, सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। यहां के आसपास के क्षेत्र में यहां के मूल निवासी असमिया लोग भी बसे हैं, उनका भी भरपूर सहयोग रहता है। 'बिजयनगर' की आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो यहां पहले लकड़ी का कारोबार बड़े पैमाने पर होता था पर आज यहां सुपारी का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है, इसीलिए इसकी खरीदी और बिक्री सबसे ज्यादा होती है, इसके अलावा पिछले कुछ वर्षों में यहां इंडस्ट्रीज भी लग रही हैं, शिक्षा और अस्पताल की भी व्यवस्था यहां उत्तम है। पर्यटन की बात की जाए तो 'बिजयनगर' के आसपास कई पर्यटन क्षेत्र हैं, शिलांग यहां से मात्र दो घंटे की दूरी पर स्थित है, जो एक रमणीय स्थान है, और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'बिजयनगर' में...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

विमल जी मूलतः राजस्थान स्थित 'लाडनूं' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'बिजयनगर' में संपन्न हुई है। यहां आप कारोबार से जुड़े हैं साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

विमल बगड़ा
व्यवसायी एवं समाजसेवी
लाडनूं निवासी-बिजयनगर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८६३८०९१०९०



जुगल किशोर अग्रवाल
अध्यक्ष अग्रवाल पंचायत
फतेहपुर शेखावटी निवासी-पलासबाड़ी प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३५१०२८६६

हमें अन्यत्र जाने ही नहीं दिया। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण और मिलनसार है, सभी एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं, यहां के स्थानीय समाज द्वारा प्रतिवर्ष रासलीला खेली जाती है, जिसमें लगातार १० वर्षों तक मैं अध्यक्ष पद पर रहा। पहले की अपेक्षा यहां की आर्थिक और सामाजिक स्थिति बहुत उत्तम हुई है, यहां उद्योग व्यापार बढ़ने लगे हैं, यहां धीरे-धीरे कई इंडस्ट्रीज भी लगने लगी हैं। शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में भी यहां विकास हो रहा है, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं 'पलासबाड़ी' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

जुगल किशोर जी मूलतः राजस्थान स्थित 'फतेहपुर शेखावटी' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग १२० सालों से भी अधिक समय से 'पलासबाड़ी' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहां संपन्न हुई है। यहां आप काठ मिल के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। अग्रवाल पंचायत के लगातार २००२ से अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। काठ मिल एसोसिएशन के सचिव पद पर हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जुगल किशोर जी अपनी कर्मभूमि 'पलासबाड़ी' के संदर्भ में कहते हैं कि आज से ६० साल पहले का 'पलासबाड़ी' और आज के पलासबाड़ी में दिन रात का अंतर आ गया है। १९६० में 'पलासबाड़ी' का कुछ हिस्सा ब्रह्मपुत्र नदी के कटाव के कारण पूरी तरह से बह गया था, जिस कारण यहां रहने वाले लोग बिजयनगर व गुवाहाटी जाकर बस गए, जिनमें अधिकतर संख्या राजस्थानियों की है। 'पलासबाड़ी' में सिर्फ हमारा परिवार एकमात्र राजस्थानी परिवार है, क्योंकि यहां के लोगों ने

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● २९

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए'



लब कुमार चौधरी
कार्यकारी अध्यक्ष अग्रवाल पंचायत बिजयनगर
हिसार निवासी-बिजयनगर प्रवासी
भ्रमणध्वनि: १४३५०१९६१२

हरियाणा और राजस्थान के अग्रवाल व जैन समाज के लोग बसे हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य व मेल मिलाप बहुत ही उत्तम है, एक दूसरे के सामाजिक और धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सभी सहभागी होते हैं, यहां अग्रवाल समाज द्वारा विष्णु मंदिर का निर्माण किया गया है, जहां समय-समय पर विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं, यहां की व्यवसायिक स्थिति भी पहले की अपेक्षा बहुत ही उत्तम है, यहां सुपारी, धान, चावल का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है, पर्यटन की बात की जाए तो ‘गुवाहाटी’ यहां से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहां कई पर्यटन स्थल हैं, साथ ही यहां चांद डूबी व उकियाम जैसे नामक स्थान घूमने के लिए प्रसिद्ध हैं, ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे होने के कारण यहां के घाट बहुत ही सुंदर हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे ‘बिजयनगर’ में...

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।

लब जी मूलतः हरियाणा स्थित ‘हिसार’ के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से असम का निवासी है। पिछले कई वर्षों से आपका परिवार ‘बिजयनगर’ में बसा हुआ है। आपकी संपूर्ण शिक्षा ‘बिजयनगर’ में ही संपन्न हुई है, यहां आप ट्रांसपोर्ट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, अग्रवाल पंचायत बिजयनगर के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में सक्रिय हैं, यथासंभव अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!

लक्ष्मीनारायण जी अपनी कर्मभूमि ‘बिजयनगर’ की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के ‘बिजयनगर’ में बहुत ही अंतर आ गया है, पहले यहां लोगों के घर टीन के हुआ करते थे और अब चारों ओर बिल्डिंग बन गई है। सुविधाएं भी बढ़ गई हैं, हर तरह की व्यवस्था उत्तम हो गई है। यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है, हर समाज के लोग बसे हुए हैं। ‘बिजयनगर’ की मारवाड़ी पट्टी में सिर्फ राजस्थानी और अग्रवाल समाज के लोग बसे हैं, यहां सबसे अधिक संख्या जैन समाज की है, इसके अलावा आसपास के क्षेत्र में असमिया व अन्य धर्म व समाज के लोग बसे हैं, सभी के बीच परस्पर मेल मिलाप बहुत ही उत्तम है। अग्रवाल समाज द्वारा अग्रवाल भवन और जैन समाज द्वारा जैन मंदिर और भवन बनाया गया है, यहां लगभग २५० राजस्थानी और हरियाणा के लोग बसे हैं, सभी के द्वारा हर पर्व बड़े ही उत्साह से मनाया जाता है। यहां पूर्णतः अपनापन लगता है। व्यवसायिक स्थिति की बात की जाए तो पहले यहां पाट, धान का कारोबार बड़े पैमाने पर होता था और पिछले कुछ वर्षों में यहां सुपारी का कारोबार बड़े पैमाने पर हो रहा है, अब इसमें भी कमी आ गई है, यहां आज भी हर तरह का व्यापार होता है, जिनमें ९०% राजस्थानी समाज के लोग कार्यरत हैं। पर्यटन की बात की जाए तो यहां से १ घंटे की दूरी पर ‘गुवाहाटी’ स्थित है, जहां का विश्व प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर विशेष रूप से दर्शनीय स्थल है। ब्रह्मपुत्र नदी का किनारा यहां से मात्र १ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो घूमने का प्रमुख स्थान है ऐसे और भी कई प्रमुख दर्शनीय और स्थल हैं, आसपास के क्षेत्र में अन्य कई विशेषताएं हैं, हमारे बिजयनगर में...

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम एक ही पहचान रहनी चाहिए ‘भारत’, प्राचीन काल से हमारे देश का नाम ‘भारत’ ही रहा है और ‘भारत’ ही रहना चाहिए।

लक्ष्मीनारायण जी मूलतः राजस्थान स्थित ‘नोहर भादरा’ तहसील में स्थित ‘कलाना’ के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से ‘असम’ में बसा हुआ है। आपका जन्म असम के ‘कुकुरमारा’ में और संपूर्ण शिक्षा ‘बिजयनगर’ में हुई है। १९६८ से आपका परिवार ‘बिजयनगर’ में बसा हुआ है। यहां कारोबार में भी सक्रिय हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी जुड़े रहते हैं। अग्रवाल पंचायत में सदस्य के रूप में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

सहसंचिव अग्रवाल पंचायत बिजयनगर

नोहर भादरा निवासी-बिजयनगर प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९६७८०८९५६८



भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए इंडिया नहीं

आओ मिलकर हिंदी का सम्मान करें ‘हिंदी’ को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने की प्रतिज्ञा करें - बिजय कुमार जैन ‘हिंदी सेवी’

आइये हम सभी ‘जय भारत’ से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ३०

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’

सुशीला जी अपनी कर्मभूमि ‘बिजयनगर’ की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहती है कि पहले सभी ‘बिजयनगर’ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित ‘पलाशबाड़ी’ में रहते थे, पर वहां का कुछ हिस्सा नदी कटाव में बह जाने के कारण वहां के लोग ‘बिजयनगर’ आकर बस गए और यहां एक नई बस्ती बसाई। ‘बिजयनगर’ में अग्रवाल और जैन समाज के लोग बसे हैं, जिनमें जैन समाज की संख्या अधिक है, यहां जैन समाज द्वारा दो जैन मंदिर बनाए गए हैं, जिसमें पार्श्वनाथ जी का मंदिर बहुत ही पुराना है और भगवान वासुपूज्य जी का मंदिर कुछ वर्ष पूर्व बनाया गया है। यहां के लोगों का रहन-सहन, आचार विचार, मेल-मिलाप बहुत ही उत्तम है। जैन समाज द्वारा गुरु भगवांतों, साधु साधियों के आहार-विहार की व्यवस्था बहुत ही सुंदर ढंग से होती है, यहां अन्य समाज के लोगों का भी सहयोग भरपूर रहता है। ‘बिजयनगर’ की सामाजिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक स्थिति भी बहुत ही सुंदर है, यहां समाज के सभी लोग मुख्यतः व्यापार से जुड़े हैं, यहां सुपारी और धान का कारोबार बहुत बड़े पैमाने पर होता है। घूमने-फिरने की बात की जाए तो ‘गुवाहाटी’ यहां से ३५ किमी की दूरी पर स्थित है जो बहुत ही दर्शनीय स्थल है, इसके अलावा बिजयनगर के आसपास कुलसी व चांदुबी जैसे कई क्षेत्र हैं, जहां लोग घूमने जाना पसंद करते हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे ‘बिजयनगर’ में...

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए ‘भारत’ इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करती हूँ।

सुशीला जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले में स्थित ‘बादलवास’ की निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा ‘डीमापुर’ नागालैंड में संपन्न हुई है। आपका पीहर पक्ष ‘किराडा’ का निवासी है। पिछले ५३ वर्षों से आप ‘बिजयनगर’ में बसी हुई हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहती हैं। वर्तमान में दिग्म्बर जैन महिला समाज की अध्यक्षा हैं। जय भारत!



संतलाल शर्मा
महामंत्री जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति बैंगलुरु
महेंद्रगढ़ निवासी-बैंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४५०७७९४६

राजनीतिक स्थिति पहले की अपेक्षा बहुत ही मजबूत हुई है। महिलाएं भी धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम में बड़े चढ़कर सहभागी होती हैं। ‘विश्वकर्मा पूजन दिवस’ के अवसर पर समाज द्वारा विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वर्तमान में यहां बैंगलुरु में विश्वकर्मा की कृपा का परिणाम है। आज समाज के लोग देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान बना रहे हैं, भगवान विश्वकर्मा की कृपा दृष्टि के कारण ही समाज के सामाजिक, आर्थिक और

संतलाल जी भगवान विश्वकर्मा पूजन दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि संपूर्ण जांगिड-सुथार समाज के आराध्य हैं भगवान विश्वकर्मा जी, आज जांगिड-सुथार समाज शिल्प कला के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यह सब भगवान विश्वकर्मा जी की ही कृपा का परिणाम है। आज समाज के लोग देश ही नहीं विदेशों में भी अपनी पहचान बना रहे हैं, भगवान विश्वकर्मा की कृपा दृष्टि के कारण ही समाज के सामाजिक, आर्थिक और

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं महत्वपूर्ण समर्थन करता हूँ।

संतलाल जी मूलतः हरियाणा के ‘महेंद्रगढ़’ जिले में स्थित गांव दोस्तपुर (नांगल चौधरी) के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा ‘महेंद्रगढ़’ में ही संपन्न हुई है। १९९२ से आप ‘बैंगलुरु’ में बसे हैं और इंटीरियर के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति बैंगलुरु के महामंत्री पद पर सक्रिय हैं, साथ ही अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा में प्रदेश उपाध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई संस्थानों में भी यथा संभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

महावीर जी विश्वकर्मा पूजन दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि भगवान विश्वकर्मा जी हमारे संपूर्ण जांगिड सुथार समाज के आराध्य हैं, उनकी कृपा दृष्टि से ही आज संपूर्ण समाज हस्तकला के साथ अन्य क्षेत्रों में अपनी निपुणता से उच्च मुकाम हासिल कर रहा है। भगवान विश्वकर्मा जी की जिसने भी आराधना की, उसके काम अवश्य सफल हुए हैं। आज ‘जांगिड’ समाज का नाम देश ही नहीं विदेशों में भी फैल रहा है। आज ‘जांगिड’ समाज की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति पहले की शेष पृष्ठ ३२ पर...

महावीर प्रसाद जांगिड
अध्यक्ष विश्वकर्मा दातक
नीमकाथाना निवासी-अहमदाबाद प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५१७८१०३



हिंदी में मानवता है इसलिए हिंदी सर्वमान्य है-बिजय कुमार जैन

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाऊ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ३१

नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’



पृष्ठ ३१ से... अपेक्षा बहुत ही सुदृढ़ हुई है, महिलाएं भी हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाती हैं, उनके द्वारा भी विभिन्न धार्मिक सामाजिक कार्यों को संपन्न किया जाता है। अहमदाबाद में विश्वकर्मा पूजन दिवस के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाते हैं। भगवान विश्वकर्मा जी की पूजा अर्चना की जाती है, जिसमें संपूर्ण समाज सम्मिलित होता है, भगवान विश्वकर्मा जी के चरणों में मेरा कोटि-कोटि वंदन... ‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ, क्योंकि प्राचीन काल से ही हमारे देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहा है और ‘भारत’ ही रहना चाहिए। महावीर जी मूलतः राजस्थान स्थित ‘नीमकाथाना’ के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९८९ से आप गुजरात के अहमदाबाद में बसे हुए हैं और कंस्ट्रक्शन के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा गुजरात के प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में विश्वकर्मा दत्तक संस्था के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं तथा अन्य सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!



मांगललाल जांगिड़
जिलाध्यक्ष अ.भा. जांगिड़ ब्राह्मण महासभा
सीकर निवासी-नांदेड़ प्रवासी
भ्रमणाध्वनि: ९८२२५४७१७८

मांगललाल जी ‘विश्वकर्मा’ जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि भगवान विश्वकर्मा जी हमारे आराध्य हैं, संपूर्ण समाज पर उनकी कृपा दृष्टि ना सिर्फ शिल्प कला के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों में भी बढ़-चढ़कर रही है। आज समाज में शिक्षा का स्तर बढ़ जाने से समाज के बच्चे अन्य क्षेत्रों में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। समाज के कई बंधु ऐसे हैं जिन्होंने अपनी शिल्प कला के कौशल से देश दुनिया में अपना नाम रोशन किया है और जांगिड़ सुथार समाज को एक नई पहचान दिलाई है। जांगिड़ सुथार समाज की सामाजिक स्थिति पहले की अपेक्षा बहुत ही सुदृढ़ हुई है। राजनीतिक क्षेत्र में भी समाज को आगे आना चाहिए। भगवान विश्वकर्मा की कृपा दृष्टि हम पर इसी तरह बनी रहे यही कामना करते हैं।

समाज की महिलाएं भी आज हर धार्मिक व सामाजिक कार्यों के साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, उनमें भी समाज के प्रति कुछ कर गुजरने के लिए जागरूकता निर्माण हो रही है। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक हो रही है, उन्हें अपने धर्म और समाज से जोड़ा जाना चाहिए। ‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए, इंडिया तो हमारे देश की कभी पहचान थी ही नहीं, यह तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों का परिणाम है कि आज हमारे देश को दो नामों से जाना जाता है भारत व इंडिया जो सर्वथा अनुचित है।

मांगललाल जी मूलतः राजस्थान स्थित ‘सीकर’ के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा ‘सीकर’ में ही संपन्न हुई है। १९९४ से आप महाराष्ट्र के ‘नांदेड़’ में बसे हैं, कंस्ट्रक्शन व ठेकेदार के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के जिला अध्यक्ष हैं, साथ ही आप राजनीति में भी रुद्धान रखते हैं। जय भारत!

जयपाल जी ‘विश्वकर्मा’ जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि भगवान विश्वकर्मा जी हमारे आराध्य हैं, उनकी कृपा दृष्टि से ही आज संपूर्ण समाज हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। महाभारत के पूर्व हमारे समाज गौरवशाली इतिहास रहा है, पर आज हमारे समाज में आर्थिक भेदभाव के कारण कई विषमता निर्माण हो रही है, जिसे रोकने की आवश्यकता है, समाज की इसी विषमता के कारण बिखरा हुआ है जो हमारे समाज के लिए सबसे बड़ा नुकसानदायक है, अपने समाज को आगे लाने के लिए समाज में एकता लाना बहुत जरूरी है और इसके लिए समाज के सभी प्रमुखों को मिलकर कार्य करना होगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, अपने बच्चों को धर्म और समाज के वास्तविक महत्व को समझाने की आवश्यकता है, इसके लिए प्रचार प्रसार करने की आवश्यकता है, जिससे उनमें अपने धर्म और समाज के प्रति जागरूकता निर्माण हो, तभी युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ा रहेगा।

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, हमारे देश का नाम प्राचीन काल से भारत ही रहा है, दुष्प्रतं-शकुन्तला पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम ‘भारतवर्ष पड़ा। इंडिया तो अंग्रेजों की देन है, हमारी पहचान ‘भारत’ से ही है।

जयपाल जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित ‘बड़ौत’ के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ४० सालों से आप दिल्ली के नांगलोई में बसे हैं और व्यावसायिक रूप से सक्रिय हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के संगठन मंत्री हैं, पहाड़गंज स्थित विश्वकर्मा मंदिर के सचिव पद पर सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

जयपाल शर्मा (जांगिड़)

संगठन मंत्री अ.भा. जांगिड़ ब्राह्मण महासभा

बड़ौत निवासी-दिल्ली प्रवासी

भ्रमणाध्वनि: ९२५०९२५८९९



हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

आइये हम सभी ‘जय भारत’ से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान

Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ३२

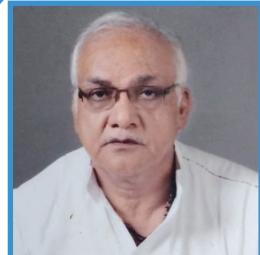
नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’

विनोद जी ‘गंगासागर’ जी के महत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कोलकाता स्थित ‘गंगासागर’ जी का अपना पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व है, कहा जाता है कि ‘सारे तीरथ बार-बार’ गंगासागर एक बार क्योंकि सारे तीरथ को करने पर जो पूण्य प्राप्त होता है उतना ही ‘गंगासागर’ में एक बार स्नान करके प्राप्त होता है। ‘गंगासागर’ में स्नान कर पापों से मुक्ति पाई जाती है। हम एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करें, इसीलिए हम भारतीयों का यह श्रद्धा का मुख्य केंद्र है, गंगासागर में स्नान करने के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ लाखों में होती है, श्रद्धालुओं को भोजन, पानी, ठहरने, चिकित्सा व अन्य सुविधाएं देने के लिए यहां की कई सामाजिक संस्थाएं कार्य करती हैं। १९८० में स्थापित ‘बिहार नागरिक संघ’ की स्थापना हमारे बुजुर्गों ने की, उनका यही उद्देश्य था कि आने वाले श्रद्धालुओं को उत्तम सुविधा प्रदान की जाए। वर्तमान में भी इसी उद्देश्य को लेकर सतत प्रयास करते हैं और कोलकाता के बाबूधाट और अवतन घाट पर शिविर का आयोजन किया जाता है। वर्तमान ममता सरकार द्वारा इस ओर विशेष ध्यान दिया गया है, आज हर तरह की सुविधाएं गंगासागर में उपलब्ध होने लगी हैं। ‘बिहार नागरिक संघ’ भी इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए रहने, भोजन, चिकित्सा की सुविधा पिछले कई वर्षों से करता आ रहा है। वर्तमान ममता सरकार द्वारा भी यात्रियों के आवागमन व अन्य सुविधाओं के लिए कई कार्य किए गए हैं, जिससे आज यहां यात्रियों को हर सुविधा उपलब्ध हो जाती है। हमारा युवा वर्ग भी अपने धर्म और समाज से अधिक जुड़ने लगा है, वह भी विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागी होता है। ‘गंगासागर’ में यात्रियों को सुविधा प्रदान करने के लिए व सेवा देने के लिए युवक वर्ग निःशुल्क सतत सक्रिय रहता है।

विनोद जी मूलतः बिहार स्थित वैशाली के निवासी है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा ‘वैशाली’ में ही संपन्न हुई है। १९८४ से आप कोलकाता में बसे हैं और चाय एक्सपोर्ट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। ‘बिहार नागरिक संघ’ कोलकाता के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में सक्रिय हैं, अखिल भारतीय कुर्मि समाज पश्चिम बंगाल के महामंत्री पद पर भी सक्रिय हैं, अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत!



अंबिका प्रसाद शुक्ला
अध्यक्ष कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति
अमेठी निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७४८७२२३९९

५६ कैप लगते हैं। पहले ‘गंगासागर’ यात्रा के लिए यात्रियों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, जब से ममता बनर्जी की सरकार आई है तब से यात्रियों को तो सुविधा मिलती है, साथ ही विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा कैप लगाने के लिए भी सुविधा प्रदान की जाती है, जिससे बहुत ही सहूलियत मिल जाती है, यात्रियों की अच्छी से अच्छी सेवा प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं, हमारी एक संस्था है ‘कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति’ जो अमेठी में स्थित कालिका धाम के नाम से बनायी गयी है, यह संस्था १९९३ से पंजीकृत है, श्रद्धालुओं को सेवा प्रदान करती आ रही है, संस्था में युवा वर्ग भी बहुत बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं, उनके द्वारा ही ‘गंगासागर’ के श्रद्धालुओं की सेवा तन-मन से की जाती है। ‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’ संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ ‘भारत’ ही रहना चाहिए।

अंबिका जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित ‘अमेठी’ के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा ‘अमेठी’ में ही संपन्न हुई है, पिछले ५० सालों से आप कोलकाता में बसे हैं और ट्रांसपोर्ट व ऑयल लुब्रिकेंट के कार्य से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में ‘कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति’ के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं। जय भारत!

उमाशंकर जी ‘गंगासागर’ जी के महत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कहते हैं कि ‘सारे तीरथ बार-बार गंगासागर एक बार’ क्योंकि ‘गंगासागर’ जी की यात्रा पहले बहुत ही कठिन थी, सुविधाओं की कमी शी पर पिछले कुछ वर्षों में और ममता सरकार द्वारा यहां यात्राओं की सुविधा देने के उद्देश्य से कई सुविधाएं दी जा रही हैं, आज ‘गंगासागर’ जी की यात्रा करना सरल है और यात्रियों को रहने ठहरने व अन्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए यहां ५६ संस्थाएं शिविर आयोजित करती हैं, उन्हीं में से एक है ‘कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति’ जो १९९३ से कार्यरत है, शेष पृष्ठ ३४ पर...

उमाशंकर पांडेय
सचिव कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति
अमेठी निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४३३०६६०१४



यदि मुझे विश्वास हो जाये कि ‘हिन्दी’ राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं ‘हिन्दी’ को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान
Quit INDIA Name From the Constitution

● फरवरी २०२४ ● ३३
नीम लगाओ पर्यावरण बचाओ

भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
‘भारत को ‘भारत’ ही बोला जाए’



पृष्ठ ३३ से... संस्था के माध्यम से बाबूधाट और गंगासागर में यात्रियों के रहने, ठहरने और खाने के साथ-साथ अन्य सुविधाएं भी निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। युवाओं का भी इसमें बढ़-चढ़कर योगदान रहता है, समाज सेवा कार्यों के लिए वे सभी आगे रहते हैं। उमाशंकर जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित 'अमेठी' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'अमेठी' में ही संपन्न हुई है। १९९७ से आप 'कोलकाता' में बसे हैं, एलआईसी एजेंट और शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं, वर्तमान में कोलकाता 'श्री कालिका देवी सेवा समिति' के सचिव पद पर सक्रिय हैं, यथासंभव अन्य संस्थाओं में भी जुड़े रहते हैं। जय भारत!



रामदयाल तिवारी
उपाध्यक्ष कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति
प्रतापगढ़ निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८७४९४३०२७

बड़े ही श्रद्धा से इस स्थान पर आते हैं और स्नान करते हैं। परोपकार की भावना रखते हुए श्रद्धालुओं की निःशुल्क सेवा हेतु 'कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति' का गठन किया गया है, यह अमेठी में स्थित कालिका देवी के नाम पर रखा गया है, इस सेवा समिति के माध्यम से श्रद्धालुओं को रहने व भोजन, चिकित्सा व अन्य सुविधा निःशुल्क प्रदान की जाती है। समाज के उच्चतम से लेकर निम्नतम लोगों को सेवा उपलब्ध कराई जाती है। 'गंगासागर' जी के स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालु प्रथम बाबू धाट में आते हैं, जहां पर कई सामाजिक संस्थान शिविर लगाती है, तत्पश्चात सेवा समिति का दूसरा शिविर गंगासागर में लगता है, दोनों ही स्थान पर यात्रियों की निःशुल्क सेवा कई दिनों तक की जाती है, जो भी यात्री संस्था के तरफ से 'गंगासागर' स्नान के लिए जाता है, उनके ठहरने, रखरखाव, स्वास्थ्य चिकित्सा को लेकर संस्था के सदस्य काफी सजग रहते हैं। पिछले ३५ सालों से यह संस्था लगातार कार्यरत है, युवा वर्ग को अधिक से अधिक से जोड़ने का प्रयास किया जाता है, क्योंकि युवा वर्ग ही हमारा भविष्य है, वह अपने धर्म और समाज से जुड़े गे तो ही हमारी नींव मजबूत होगी, युवाओं को जोड़ने के लिए उन्हें कई जिम्मेदारियां दी जाती हैं, जो इस जिम्मेदारी पर खरे उतरते हैं, उनका सम्मान भी किया जाता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारे सनातन धर्म का प्रतीक है, हमारी पहचान तो भारत से ही है। रामदयाल जी मूलतः उत्तर प्रदेश स्थित प्रतापगढ़ के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'प्रतापगढ़' में तथा उच्च शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुई है, यहां आप स्टील फैक्ट्री के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, कोलकाता श्री कालिका देवी सेवा समिति के सचिव की भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत!

मिश्री लाल जी बताते हैं कि पश्चिम बंगाल साहू समाज द्वारा 'गंगासागर' मेले के अवसर पर शिविर का आयोजन किया जाता है, पूरे पश्चिम बंगाल में इस संस्था की ४७ शाखाएं कार्यरत हैं जो गंगासागर मेले के लिए शिविर का आयोजन करती है, शिविर में गंगा सागर स्नान के लिए आने वाले श्रद्धालुओं के लिए रहने व खाने की व्यवस्था की जाती है, पिछले ४६ वर्षों से लगातार कलकत्ता में १० दिनों का अस्थायी कैम्प हमारे मान्यता प्राप्त संस्था कोलकाता साहू समाज, मध्य कोलकाता साहू

समाज व भोजपुरी साहू समाज द्वारा और गंगासागर द्वारा भी किए जाते हैं। गंगासागर मेले के अवसर पर श्रद्धालुओं को यथासंभव जरूरत की सारी चीज उपलब्ध कराई जाती है और यह सब सेवाएं मुफ्त प्रदान की जाती है, इस पावन अवसर पर समाज के सभी कार्यकर्ता और वरिष्ठ जन बढ़ चढ़कर सहभागी होते हैं। संस्था द्वारा सामाजिक भवन का भी निर्माण किया गया है, इस भवन में ४० कमरे हैं, जिसमें रहने की उत्तम व्यवस्था है, ऐसे अन्य कई कार्यक्रम इस संस्था के माध्यम से किए जाते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि हमारे देश की वास्तविक पहचान सदियों से 'भारत' नाम से थी और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

मिश्रीलाल जी मूलतः बिहार के गया जिले में स्थित तरवां के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में ही संपन्न हुई है, यहां आप वकालत के पेशे से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। पश्चिम बंगाल तैलिक साहू सभा के महामंत्री पद पर सक्रिय हैं, आप एक प्रसिद्ध तैराकी हैं, कोलकाता के दि हाटखोला स्विमिंग क्लब के कार्यकरी अध्यक्ष हैं। जय भारत!

मिश्रीलाल साव
महामंत्री पश्चिम बंगाल तैलिक साहू सभा
गया निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९२३१५२२७९६

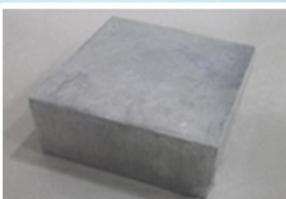


हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

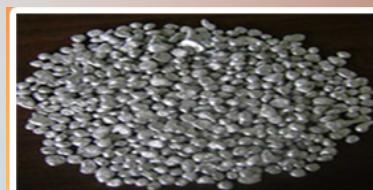
आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD G R METALLOYS PVT LTD



**SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN
JAYANT BABULAL JAIN
SHAILESH BABULAL JAIN**



**Manufactures of Aluminium Alloy Ingot,
Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar,
Aluminium Shots, Aluminium Cubes**

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

मैं भारत हूँ

भारतीय संस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, प्रौद्योगिक धराता को ऐसे कहती पहिला

अभी तक भारत के शहरों के इतिहास बताते हुए प्रकाशित विशेषांक...



विशेष छवि

विज्ञापन प्रकाशन करने पर
पूरे साल
मैं भारत हूँ
पत्रिका मुफ्त



भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

आप चाहें तो प्रस्तुत विशेषांक

आपके घर-कार्यालय की

शोभा व ज्ञान (आसाम) बढ़ाने के लिए मंगवा सकते हैं



आपके हाथों में

ज्योति
9820873689

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - ४०० ०५९.

दूरभाष - ०२२-२८५० ९९९९

अणु डाक: mailgaylorgroup@gmail.com अन्तरराताना: www.mainbharathun.co.in

मात्र ₹ १२००/- में
प्रति महिना, पूरे वर्ष तक
(आपके द्वारा)

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीय लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए